चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

दिनांक : 20 सितम्बर 2019

सूचना

पाठ्यक्रम समिति की बैठक दिनांक 29 जून 2019 को संपन्न हुई बैठक में प्रस्तावित पाठ्यक्रम जो कि विद्वत् परिषद् तथा कार्यपरिषद् से पारित होने के बाद विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर जारी किया गया था, में स्वतः स्पष्ट है कि बी०ए० हिंदी के पाठ्यक्रम में आंशिक संशोधन होने के कारण बी०ए० हिंदी प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष तथा तृतीय वर्ष इसी सत्र 2019–20 से प्रभावी होंगे।

कृपया तदनुसार पाठ्यक्रम इसी वर्ष से पढ़ाए जाएंगे।

20/9/19

(डॉ० शशि प्रभा त्यागी)
संयोजक द्वितीय, पाठ्यक्रम समिति हिंदी विषय,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

Scanned by CamScanner

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

संस्थागत एवं व्यक्तिगत

बी0 ए0

हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम

(वर्ष 2019–20 से प्रभावी)

प्रथम वर्ष

1 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
2 हिन्दी नाटक और रंगमंच

द्वितीय वर्ष

1 आधुनिक हिन्दी काव्य
2 हिन्दी कथा साहित्य

तृतीय वर्ष

1 अद्यतन हिन्दी एवं कौरवी लोक काव्य
2 हिन्दी निबन्ध तथा अन्य गद्य विधाएं

बी0 ए0

प्रयोजनमूलक हिन्दी पाठ्यक्रम

(वर्ष 2019–20 से प्रभावी)

प्रथम वर्ष

1 भारत सरकार की राजभाषा नीति
2 हिन्दी का प्रायोगिक व्याकरण और वार्तालाप
3 प्रायोगिक कार्य

द्वितीय वर्ष

1 हिन्दी में कार्यालयी और वाणिज्यिक पत्राचार
2 टिप्पणी एवं आलेखन
3 प्रायोगिक कार्य

तृतीय वर्ष

1 अनुवाद, दुभाषिया – प्रविधि, पारिभाषिक शब्दावली
2 संचार माध्यम
3 प्रायोगिक कार्य

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

बी0ए0 (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
प्रथम प्रश्न पत्र
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

50 अंक

निर्धारित कवि– कबीर (30 साखी तथा 05 पद), जायसी (पद्मावत का एक खण्ड), सूरदास (20 पद), तुलसीदास (20 छन्द), बिहारी (30 दोहे), घनानन्द (20 छन्द), भूषण (20 छन्द)।

द्रुत पाठ – सरहपा, , चन्दवरदाई, रस छंद अलंकार

कबीरदास : साखी

गुरूदेव कौ अंग :	सतगुरू की महिमा अनंत, गूंगा हूवा बावला, दीपक दीया तेल भरि, जाका गुरू भी अंधाला, नां गुर मिल्या न सिष भया, माया दीपक नर पतंग, सतगुरू हम सूं रीझ कर।
सुमिरण कौ अंग :	कबीर कहता जात हूं, भगति भजन हरि नांव है, कबीर सूता क्या करै काहे न देखै जागि।
बिरह कौ अंग :	चकवी बिछुटी रैणि की, बहुत दिनन की जोवती, यहु तन जारौं मसि करूं, हंसि हंसि कंत न पाइए, नैनां अंतर आव तूं, कबीर देखत दिन गया, कै बिरहनि कूं मींच दे, कबीर तन मन यौं जल्या, बिरह भुवंगम तन बसै, अषणियाँ झाँई पड़ी, बिरहनि ऊभी पंथ सिरि।
परचा कौ अंग :	पारब्रह्म के तेज का, अंतरि कंवल प्रकासिया, पिंजर प्रेम प्रकासिया, पांणी ही तैं हिम भया, जब मैं था तब हरि नहीं, मानसरोवर सुभर जल, कबीर कंवल प्रकासिया।
रस कौ अंग :	कबीर हरिरस यौं पिया, राम रसाइण प्रेम रस, कबीर भाठी कलाल की।
पद :	संतो भाई आई ज्ञान की आंधी, जतन बिनु मिरगन खेत उजारे, रहना नहीं देश बिराना है, काहे री नलिनी तू कुम्हलानी, दुलहिनि गावहु मंगल चार।

जायसी	पद्मावत का मानसरोदक खण्ड (सम्पूर्ण)

सूरदास

विनय :	आजु हौं एक एक करि, अविगत गति कछु कहत न आवै, रे मन मूरख जनम गंवायौ, गोविन्द प्रीति सबनि की मानत, जा दिन मन पंछी उडि जैहैं, अपुनपौ आपुन ही बिसरयौ, प्रभु कौ देखौ एक सुभाई।
वात्सल्य :	सोभित कर नवनीत लिये, खेलत मै को काको गुसैया, देखो भाई दधिसुत में दधि जात
श्रृंगार :	बूझत स्याम कौन तू गोरी, निसिदिन बरसत नैन हमारे, अंखियां हरि दरसन की भूखी, मधुवन तुम कत रहत हरे, निरगुन कौन देस को बासी, ऊधौ अंखियां अति अनुरागी, आयो घोष बड़ो व्यापारी, मोहन मांग्यो अपनो रूप, ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाही, अति मलीन वृषभान कुमारी, लरिकाई को प्रेम आलि कैसे करके छूटत।

29/6/19

<u>तुलसीदास</u>

विनयपत्रिका : ऐसी मूढता या मन की, ऐसो को उदार जग माही,
केसव कहि न जाइ का कहिये, हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी, हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों, अब लौं नसानी अब न नसइहौं, माधव मोह–फाँस क्यों टूटै।

कवितावली : अवधेश के द्वारे सकारे गई, बर दंत की पंगति कुंद कली, कीर के कागर ज्यों नृप चीर, रावरे दोष न पायन को, पातभरी सहरी सकल सुत, पुर तें निकसी रघुबीर बधू, सीस जटा उर बाहु विसाल, बालधी बिसाल बिकराल।

दोहावली : एक भरोसो एक बल, जो घन बरसै समय चिर, चढत न चातक चित कबहुं, बध्यों बधित पर्‌यो पुन्य जल, बरसि परुष पाहन पयद्।

<u>बिहारी :</u> मेरी भवबाधा हरौ, नीकी दई अनाकनी, जमकरि मुंह तरहरि, या अनुरागी चित्त की, मोहनि मूरति स्याम की, तजि तीरथ हरि राधिका, चिरजीवौं जोरी जुरै, अजौ तर्‌यौना ही रह्‌यौ, स्वारथ सुकृतु न श्रम वृथा, नर की अरु नल नीर की, बढ़त बढ़त सम्पत्ति सलिल, बसै बुराई जासु तन।
छकि रसाल सौरभ सने, तिय तिरसौंहे मन किये, ज्यों ज्यों बढत विभावरी, जुवति जोन्ह में मिलि, जोग जुगति सिखए सबै, मंगलबिंदु सुरंग मुख, खेलन सिखए अलि भले, रससिंगार मंजनु किये, चमचमात चंचल नयन, अरुन बरन तरुनि चरन, दृग उरझत टूटत कुटुम, पिय के ध्यान गहि गही, कहत सबै बैंदी दिये, मंजुन करि खंजन नयनि, औरे ओप कनीनिकनि, कर मुंदरी की आरसी, मैं मिसहा सोयो समुझि, बतरस लालच लाल की, हेरि हिंडोरे गगन तें।

<u>घनानंद</u> : अति सूधो सनेह को मारग है, भोर तें साँझ लौं कानन ओर, झलकै अति सुंदर आनन गौर, हीन भये जल मीन अधीन, घन आनंद जीवन रूप सुजान, इस बांट परी सुधि रावरे भूलनि, पूरन प्रेम को मंत्र महा पन, पहिले अपनाय सुजान सनेह सों, घनआनंद जीवन मूल सुजान की, आसा–गुन बांधि कै भरोसो सिल धरि छाती, कंत रमै उर अंतर मैं, मरिबो बिसराम गनै वह तो, कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर, एरे बीर पौन तेरा सबै ओर गौन, बैरी वियोग की हूकन जारत, पर काजहि देह को धारि फिरौ, एकै आस एकै विसवास प्रान गहे बास, रावरे रूपकी रीति अनूप, चोप चाह चावनि चकोर भयौ चाहत ही।

भूषण :– **शिवा बावनी 25 पद**
साजि चतुरंग बीर रंग में तुरंग चढ़ि, बाने फहराने घहराने घंटा गजन के, बद्दल न होंहिं दल दच्छिन घमंड माहिं, बाजि गजराज सिवराज सैन साजत ही, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, उतरि पलँग ते न दियो है धरा पै पग, अंदर ते निकसी न मंदर को देख्यो द्वार, सोंधे को अधार किसमिस जिनको अहार, साहि सिरताज और सिपाहिन में पातसाह, किबले की ठौर बाप बादसाह साहजहाँ, हाथ तसबीह लिए प्राप्त उठै बन्दगी को, कैयक हजार जहाँ गुर्जबरदार ठाढ़े, सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग, राना भो चमेली और बेला सब राजा भये, कूरम कमलकमधुज है कदम फूल,

देवल गिरावते फिरावते निसान अली, साँच को न मानै देवी देवता न जानै अरु, कुभकन्न असुर औतारी अवरंगजेब, छूटत कमान और तीर गोली बानन के, उतै पातसाह जू के गजन के ठट्ठ छूटे, जीत्यो सिवराज सलहेरि को समर सुनि।

प्रथम प्रश्न– (क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघूत्तरी प्रश्न।
(प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) (10 X 1 = 10)

(ख) अनिवार्य पाँच लघूत्तरी प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से) (5 X 2 = 10)

इकाई–1. कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या। (2 X 4 = 8)

इकाई–2. बिहारी, भूषण, घनानंद के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या। (2 X 4 = 8)

इकाई–3. कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7 X 1 = 7)

इकाई–4. बिहारी, भूषण, घनानन्द पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7 X 1 = 7)

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकें – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

1– कबीर एक अनुशीलन – डॉ0 रामकुमार वर्मा
2– कबीर की विचारधारा – डॉ0 त्रिगुणायत–साहित्य निकेतन कानपुर
3– कबीर व्यक्तित्व एवं कृतित्व – चंद्रमोहन सिंह, ज्ञान लोक इलाहाबाद
4– कबीर साहित्य की परख – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी– भारती भण्डार, इलाहाबाद
5– कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल, दिल्ली
6– कबीर – विजयेन्द्र स्नातक– राधा कृष्ण, दिल्ली
7– कबीर की भाषा – माताबदल जायसवाल–विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
8– सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी– विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
9– सूरदास और उनका साहित्य – हरबंश लाल शर्मा– भारत प्रकाश मंदिर अलीगढ़
10– सूरदास और उनका काव्य – गोवर्द्धन लाल शुक्ल– ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा
11– सूर की काव्य साधना – गोविन्द राम शर्मा– नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
12– सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम– एस चंद एण्ड संस दिल्ली
13– सूर सौरभ – मुंशी राम शर्मा– ग्रन्थम, कानपुर
14– महाकवि सूरदास – जय किशन प्रसाद खण्डेलवाल रवीन्द्र प्रकाशन, आगरा
15– त्रिवेणी – रामचन्द्र शुक्ल– नागरी प्रचारिणी सभा काशी
16– गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल– नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
17– तुलसी मानस रत्नाकर – भाग्यवती सिंह– सरस्वती पुस्तक सदन माता कटरा आगरा
18– तुलसीदास और उनका काव्य – रामनरेश त्रिपाठी– राजपाल एण्ड संस दिल्ली
19– तुलसी दर्शन – बलदेव प्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
20– तुलसी रसायन – भगीरथ मिश्र– साहित्य भवन इलाहाबाद
21– तुलसी – उदयभानु सिंह– राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
22– जायसी का पद्मावत : काव्य तथा दर्शन– गोविन्द त्रिगुणायत, साहित्य निकेतन, कानपुर
23– जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन – जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद
24– जायसी का काव्य– सरोजनी पाण्डेय– हिमालय पाकेट बुक्स, दिल्ली
25– हमारे कवि – राजेन्द्र सिंह
26– बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
27– बिहारी और उनका साहित्य – हरबंशलाल शर्मा

28– कवित्रयी– (बिहारी, देव, घनानंद) – गिरीश चन्द्र तिवारी पुस्तक प्रचार, दिल्ली
29– बिहारी और घनानंद – परमलाल गुप्त
30– बिहारी का काव्य : आनन्द मंगल –

काव्य शास्त्र–
01– अलंकार पारिजात : नरोत्तम स्वामी– लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा
02– नूतन काव्य प्रकाश– डॉ0 उपेन्द्र त्रिपाठी– साहित्य रत्नालय, कानपुर
03– काव्य कौमुदी– डॉ0 बालकृष्ण गुप्त, साहित्य निकेतन कानपुर
04– अलंकार, रस, छन्द, परिचय– भारत भूषण त्यागी, लायल बुक डिपो, ग्वालियर
05– काव्य लोक गोपीनाथ शर्मा, किताब महल, इलाहाबाद
06– काव्य के रूप– गुलाब राय– आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

बी0ए0 (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न पत्र
हिन्दी नाटक और रंगमंच

50 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम – (क) नाटक–ध्रुवस्वामिनी–जयशकंर प्रसाद, आधे–अधूरे – मोहन राकेश

(ख) एकांकी – औरंगजेब की आखिरी रात (डॉ0 राम कुमार वर्मा), स्ट्राइक (भुवनेश्वर) भोर का तारा (जगदीश चन्द्र माथुर), नये मेहमान (उदयशकंर भट्ट), सूखी डाली (उपेन्द्र नाथ 'अश्क')

द्रुत पाठ – (क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, धर्मवीर भारती।
(ख) हिन्दी रंगमंच का सामान्य परिचय

प्रथम प्रश्न

(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघूत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)	(10 X 1 = 10)
(ख) अनिवार्य पाँच लघूत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से)	(5 X 2 = 10)
इकाई–1. नाटकों पर निर्धारित व्याख्याएँ।	(2 X 4 = 8)
इकाई–2. एकांकियों पर निर्धारित व्याख्याएँ।	(2 X 4 = 8)
इकाई–3. ध्रुवस्वामिनी एवं आधे–अधूरे से निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न।	(7 X 1 = 7)
इकाई–4. निर्धारित एकांकियों एवं एकांकीकारों से सम्बन्धित आलोचनात्मक प्रश्न	(7 X 1 = 7)

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकें – हिन्दी नाटक और रंगमंच

01– हिन्दी नाटक : इतिहास के सोपान – गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
02– हिन्दी नाटक : आजकल – जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
03– आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच – लक्ष्मी नारायण लाल, साहित्य भवन, इलाहाबाद
04– हिन्दी नाटक – बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
05– आधुनिक हिन्दी नाट्यकारों के सिद्धान्त – निर्मला हेमन्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
06– प्रसाद के नाटक : सृजनात्मक धरातल और भाषिक चेतना – गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
07– नाटककार जगदीश चंद्र माथुर – गोविन्द चातक, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
08– हिन्दी एकांकी की शिल्प विधि का विकास – सिद्धनाथ कुमार
09– प्रतिनिधि जयशंकर प्रसाद – (सं0) सत्येन्द्र तनेजा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10– हिन्दी एकांकी का रंगमंचीय अनुशीलन – भुवनेश्वर महतो, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
11– हिन्दी नाटक : मिथक एवं यथार्थ – रमेश गौतम
12– एकांकी और एकांकीकार – रामचरण महेन्द्र
13– हिन्दी नाटक – दशरथ ओझा
14– ध्रुवस्वामिनी – वस्तु एवं शिल्प – सुरेश नारायण
15– प्रसाद की नाट्यकला – सुजाता विष्ट

29/6/19

बी0 ए0 (द्वितीय वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
प्रथम प्रश्न पत्र
आधुनिक हिन्दी काव्य

पूर्णांक : 50

निर्धारित कवि – मैथिलीशरण गुप्त– पंचवटी के प्रारम्भ [illegible]
जयशंकर प्रसाद – बीती विभावरी जाग री, 'आँसू' के प्रारम्भिक ~~पाँच~~ 55 छंद, अरूण यह मधुमय देश हमारा, पेशोला की प्रतिध्वनि। जुही की कली
सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला – भिक्षुक।
सुमित्रानन्दन पन्त – नौका विहार, बादल, अल्मोड़े का बसन्त, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र, मौन निमंत्रण।
महादेवी वर्मा – मैं नीर भरी दुख की बदली, पंथ रहने दो अपरिचित, विरह का जल–जात जीवन, यह मंदिर का दीप, चिर सजग आँखें उनींदी।
रामधारी सिंह दिनकर – आलोक धन्वा, परम्परा, पाप, राजर्षि अभिनन्दन, विपथगा।

द्रुतपाठ – श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान।

प्रथम प्रश्न –
(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) (10X1 =10)
(ख) अनिवार्य पांच लघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुतपाठ के पाठ्यक्रम से) (5X2 =10)
इकाई –1. मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के निर्धारित काव्याशों से व्याख्याएँ। (2X4 =8)
इकाई –2. सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा तथा रामधारी सिंह दिनकर के निर्धारित काव्यांशों से व्याख्याएँ। (2X4 =8)
इकाई –3. मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7X1 =7)
इकाई –4. सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा तथा रामधारी सिंह दिनकर पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7X1 =7)

सन्दर्भ/उपयोगी ग्रन्थ–

01– आधुनिक कवियों की काव्य साधना– राजेन्द्र सिंह और गौड़– श्रीराम मेहरा एण्ड संस, आगरा
02– हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि – द्वारिका प्रसाद सक्सेना– विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
03– आधुनिक हिन्दी काव्य के नवरत्न– रमेश चन्द्र शर्मा– सरस्वती प्रकाशन, कानपुर
04– छायावादी कवियों की गीत दृष्टि– डॉ0 उपेन्द्र– युगवाणी प्रकाशन, कानपुर
05– प्रसाद का काव्य – प्रेम शंकर
06– प्रसाद की कला – गुलाबराय
07– प्रसाद की कविता – भोलानाथ तिवारी– साहित्य भवन, इलाहाबाद
08– प्रसाद– रामरतन भटनागर
09– प्रसाद– नन्द दुलारे बाजपेयी
10– पंत का काव्य– डॉ0 उपेन्द्र– हिमालय पाकेट बुक्स, दिल्ली
11– पंत जी का नूतन काव्य दर्शन– डॉ0 विश्वम्भर उपाध्याय
12– सुमित्रा नंदन पंत– डॉ0 नगेन्द्र– नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
13– पंत का काव्य– प्रेमलता बाफना
14– सुमित्रानन्दन– शची रानी गुर्टू

बी0 ए0 (द्वितीय वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र

आधुनिक हिन्दी काव्य

पूर्णांक : 50

निर्धारित कवि - **मैथिली-रण गुप्त**- पंचवटी के प्रारंभ दस पद।

जयशंकर प्रसाद - बीती विभावरी जाग री, 'आँसू' के प्रारंभिक दस छंद, अरूण यह मधुमय देश हमारा, पेशोला की प्रतिध्वनि।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला - जूही की कली, भिक्षुक।

सुमित्रानन्दन पन्त - नौका विहार, बादल, अल्मोड़े का बसन्त, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र, मौन निमंत्रण।

महादेवी वर्मा - मैं नीर भरी दुख की बदली, पंथ रहने दो अपरिचित, विरह का जल-जात जीवन, यह मंदिर का दीप, चिर सजग आँखें उनींदी।

रामधारी सिंह दिनकर - आलोक धन्वा, परम्परा, पाप, राजर्षि अभिनन्दन, विपथगा।

द्रुतपाठ - श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान।

प्रथम प्रश्न -

(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) (10x1 =10)

(ख) अनिवार्य पांच लघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुतपाठ के पाठ्यक्रम से) (5x2 =10)

इकाई -1. मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के निर्धारित काव्याशों से व्याख्याएँ। (2x4 =8)

इकाई -2. सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा तथा रामधारी सिंह दिनकर के निर्धारित काव्यांशों से व्याख्याएँ। (2x4 =8)

इकाई -3. मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7x1 =7)

इकाई -4. सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा तथा रामधारी सिंह दिनकर पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7x1 =7)

सन्दर्भ/उपयोगी ग्रन्थ-

01- आधुनिक कवियों की काव्य साधना- राजेन्द्र सिंह और गौड़- श्रीराम मेहरा एण्ड संस, आगरा

02- हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि - द्वारिका प्रसाद सक्सेना- विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

03- आधुनिक हिन्दी काव्य के नवरत्न- रमेश चन्द्र शर्मा- सरस्वती प्रकाशन, कानपुर

04- छायावादी कवियों की गीत दृष्टि- डॉ0 उपेन्द्र- युगवाणी प्रकाशन, कानपुर

05- प्रसाद का काव्य - प्रेम शंकर

06- प्रसाद की कला - गुलाबराय

07- प्रसाद की कविता - भोलानाथ तिवारी- साहित्य भवन, इलाहाबाद

08- प्रसाद- रामरतन भटनागर

09- प्रसाद- नन्द दुलारे बाजपेयी

10- पंत का काव्य- डॉ0 उपेन्द्र- हिमालय पाकेट बुक्स, दिल्ली

11- पंत जी का नूतन काव्य दर्शन- डॉ0 विश्वम्भर उपाध्याय

12- सुमित्रा नंदन पंत- डॉ0 नगेन्द्र- नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

13- पंत का काव्य- प्रेमलता बाफना

14- सुमित्रानन्दन- शची रानी गुर्टू

15– कवियों में सौम्य पंत– बच्चन
16– पंत की काव्य साधना– रमेश चन्द्र शर्मा एवं क0ला0 अवस्थी साहित्य निकेतन, कानपुर
17– युग कवि निराला– राममूर्ति शर्मा, साहित्य निकेतन, कानपुर
18– युग कवि निराला– रजनीकांत लहरी उन्नाव
19– निराला की काव्य साधना– वीणा शर्मा
20– निराला का काव्य– डॉ0 नगेन्द्र
21– निराला का पुनर्मूल्यांकन– धनंजय वर्मा
22– निराला के साहित्यिक संस्कार– शिव कुमार दीक्षित, साहित्य रत्नालय, कानपुर
23– निराला– इन्द्रनाथ मदान
24– मैथिलीशरण गुप्त– आनंद प्रकाश दीक्षित
25– महादेवी : कवि एवं गद्यकार– गौतम
26– महादेवी की काव्य साधना– 'सुमन'
27– महादेवी– इन्द्रनाथ मदान
28– छायावाद और महादेवी– नंद कुमार राय
29– महादेवी की काव्य चेतना– राजेन्द्र मिश्र
30– पंत : कवि और काव्य– शारदालाल– तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
31– यशोधरा का काव्य संदर्भ– बड़सूवाला, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
32– महादेवी का काव्य सौन्दर्य– राजपाल हुकुम चन्द्र
33– अपरा–निराला– भारती भंडार, इलाहाबाद
34– रश्मि लोक–दिनकर–हिन्दी बुक सेंटर, दिल्ली

बी0 ए0 (द्वितीय वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम

द्वितीय प्रश्न पत्र

हिन्दी कथा साहित्य

पूर्णांक : 50

निर्धारित पाठ्यक्रम– (क) उपन्यास– **चित्रलेखा (भगवतीचरण वर्मा)**,

(ख) कहानी– , गुण्डा (जयशंकर प्रसाद), यही सच है (मन्नू भण्डारी), चीफ की दावत, (भीष्म साहनी), मारे गये गुलफाम उर्फ तीसरी कसम (फणीश्वर नाथ रेणु), पिता (ज्ञानरंजन) पचीस चौका डेढ़ सौ (ओमप्रकाश वाल्मीकि)

द्रुत पाठ– शैलेष मटियानी, अमरकांत, सेवाराम यात्री, मृदुला गर्ग

प्रथम प्रश्न –

(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघूत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) (10X1 =10)

(ख) अनिवार्य पांच लघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से) (5X2 =10)

इकाई –1. उपन्यासों की निर्धारित व्याख्याएँ। (2X4 =८)

इकाई –2. निर्धारित कहानियों से व्याख्याएँ। (2X4 =8)

इकाई –3. उपन्यासों पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7X1 =7)

इकाई –4. कहानियों पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7X1 =7)

सन्दर्भ/**सहायक पुस्तकें–**

01– हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ– शशि भूषण सिंहल

02– हिन्दी उपन्यास पहचान एवं परख– इन्द्रनाथ मदान

03– आधुनिक हिन्दी उपन्यास– भीष्म साहनी

04– हिन्दी उपन्यास एवं यथार्थवाद– त्रिभुवन सिंह– हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

05– उपन्यास कला के तत्व– श्री नारायण अग्निहोत्री– हिमालय पाकेट बुक्स, दिल्ली

06– उपन्यास और लोकजीवन– रेल्फ फॉक्स पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 12

07– उपन्यास : शिल्प और प्रवृत्तियाँ– डॉ0 सुरेश सिन्हा

08– हिन्दी उपन्यास– डॉ0 सुषमा धवन

09– हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव और विकास– डॉ0 प्रताप नारायण टण्डन

10– हिन्दी उपन्यासों में चरित्र चित्रण का विकास– डॉ0 रणवीर राणा

11– कहानी कला : सिद्धान्त और विकास– डॉ0 सुरेश चन्द्र शुक्ल– हिमालय पाकेट बुक्स, दिल्ली

12– आज की हिन्दी कहानी– डॉ0 धनंजय, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

13– कहानी का रचनाविधान– डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा– हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय,वाराणसी

14– नयी कहानी: परिवेश एवं परिप्रेक्ष्य– डॉ0 रामकली सराफ विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

15– कुछ हिन्दी कहानियाँ : कुछ विचार– विश्वनाथ त्रिपाठी– राजकमल, नई दिल्ली

16– हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ– सुरेन्द्र चौधरी, राधाकृष्ण, दिल्ली

17– हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास– लक्ष्मीनारायण लाल– साहित्य भवन, इलाहाबाद

बी0 ए0 (तृतीय वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
प्रथम प्रश्न पत्र
अद्यतन हिन्दी एवं कौरवी लोक काव्य

पूर्णांक : 50

निर्धारित कवि –

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन "अज्ञेय"– नदी के द्वीप, दीप अकेला, उधार, साम्राज्ञी का नैवेद्य दान, कलगी बाजरे की।

शमशेर बहादुर सिंह– उषा, लौट आ ओ धार, पीली शाम, अमन का राग, मुक्तिबोध की मृत्यु पर गज़ल।

नागार्जुन– सिंदूर तिलकित भाल, अकाल के बाद, बादल को घिरते देखा।

भवानी प्रसाद मिश्र– गीत बेचता हूँ, सतपुड़ा के जंगल, कमल के फूल।

गजानन माधव मुक्तिबोध– ब्रहम्राक्षस।

चौधरी पृथ्वी सिंह बेधड़क– 'मानवता' भजन सं0 – 01, 10, 53, तथा गीत सं0 – 05।
कृष्ण चन्द्र शर्मा– लोकगीत : 'लोक जीवन के स्वर' के अध्याय 05 से 'राष्ट्रीय आन्दोलन' गीत सं0 – 02 तथा 'शिक्षा का महत्व' गीत सं0 – 04।

द्रुतपाठ – केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', दुष्यन्त कुमार, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता।

प्रथम प्रश्न –
(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) (10X1 =10)
(ख) अनिवार्य पांच लघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से) (5X2 =10)
इकाई –1. अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन के निर्धारित काव्यांशों से व्याख्याएँ। (2X4 =8)
इकाई–2. भवानी प्रसाद मिश्र, मुक्तिबोध, कृष्ण चंद्र शर्मा, पृथ्वी सिंह बेधड़क के निर्धारित काव्यांशों से व्याख्याएँ। (2X4 =8)
इकाई–3. अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7X1 =7)
इकाई–4. भवानी प्रसाद मिश्र, मुक्तिबोध, कृष्ण चंद्र शर्मा, पृथ्वी सिंह बेधड़क पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7X1 =7)

29/6/19

अनुमोदित पुस्तकें – अद्यतन हिन्दी एवं कौरवी लोक काव्य

01– युग चारण दिनकर – सावित्री सिंह, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
02– दिनकर के काव्य में मानवतावादी प्रेम चेतना– मधुबाला, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
03– लोकप्रिय बच्चन – दीनानाथशरण, साहित्य निकेतन, कानपुर
04– बच्चन का परवर्ती काव्य– श्याम सुन्दर घोष, राजपाल, दिल्ली
05– कवि बच्चन – व्यक्ति एवं दर्शन– के0जी0 कदम, साहित्य भवन, इलाहाबाद
06– बच्चन एक मूल्यांकन– दीनानाथशरण, दरियापुर गोला, बाँकीपुर, पटना
07– अज्ञेय का रचना संसार– रामस्वरूप चतुर्वेदी
08– अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या– रामस्वरूप चतुर्वेदी, नई दिल्ली
09– भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य यात्रा– संतोष कुमार तिवारी
10– कविता यात्रा – रत्नाकर से रघुवीर सहाय– रामस्वरूप चतुर्वेदी, मैकमिलन
11– नया काव्य, नये मूल्य– ललित शुक्ल– मैकमिलन
12– नई कविता और अस्तित्ववाद– रामविलास शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
13– शमशेर की कविता– नरेन्द्र वशिष्ठ, नई दिल्ली
14– नई कविता – स्वरूप और समस्याएं– जगदीश गुप्त
15– कविता के नये प्रतिमान– नामवर सिंह
16– नागार्जुन की काव्य यात्रा– रतन कुमार पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
17– नागार्जुन का काव्य– चन्द्र हाउस सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
18– अज्ञेय : विचार एवं कविता– राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
19– आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान– केदारनाथ सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
20– समकालीन हिन्दी कविता– विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
21– समकालीन हिन्दी साहित्यः विविध परिदृश्य–रामस्वरूप चतुर्वेदी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
22– समकालीन हिन्दी कविता– ए0 अरविन्दाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
23– पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्त एवं विविधवाद– गायकवाड़, साहित्य रत्नालय, कानपुर
24– काव्य शास्त्र : विविध आयाम– मधुखराटे, विद्या प्रकाशन, कानपुर
25– पाश्चात्य काव्य शास्त्र– भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
26– सर्जना के क्षण–अज्ञेय– भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
27– नागार्जुन की कविता– अजय तिवारी
28– लोक साहित्य विज्ञान : डॉ0 सत्येन्द्र : राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
29– लोक जीवन के स्वर : डॉ0 कृष्ण चन्द्र शर्मा – कुरु लोक संस्थान, मेरठ।
30– कौरवी लोक साहित्य : प्रो0 नवीन चन्द्र लोहनी – भावना प्रकाशन, नई दिल्ली

बी0 ए0 (तृतीय वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न पत्र
हिन्दी निबन्ध तथा अन्य गद्य विधाएं

पूर्णांक : 50

निर्धारित पाठ्यक्रम–

क– निबन्ध– शिवशम्भु के चिट्ठे (बालमुकुंद गुप्त), कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता (आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी), लज्जा और ग्लानि (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल), कुटज (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी), छायावाद (नंददुलारे वाजपेयी), तुम चंदन हम पानी (विद्यानिवास मिश्र), सौन्दर्य की उपयोगिता (रामविलास शर्मा)।

ख– गद्य विधाएँ– भक्तिन (महादेवी वर्मा), सुधियाँ उस चन्दन वन की (विष्णुकान्त शास्त्री), अपोलो का रथ (श्रीकांत वर्मा), समन्वय और सह अस्तित्व (विष्णु प्रभाकर), अपनी–अपनी हैसियत (हरिशंकर परसाई)।

द्रुतपाठ – कुबेरनाथ राय, शरद जोशी, विवेकी राय, रघुवीर सहाय ।

प्रथम प्रश्न –

(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) (10X1 =10)
(ख) अनिवार्य पांच लघुत्तरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से) (5X2 =10)
इकाई –1. निर्धारित निबन्धों की व्याख्याएँ। (2X4 =8)
इकाई –2. निर्धारित गद्य विधाओं की व्याख्याएँ। (2X4 =8)
इकाई –3. निर्धारित निबन्धों पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7X1 =7)
इकाई –4. निर्धारित गद्य विधाओं पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7X1 =7)

सहायक पुस्तकें–

01– हिन्दी का गद्य साहित्य– रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
02– हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार– द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
03– हिन्दी निबंधकार– नलिन जयनाथ
04– हिन्दी निबन्ध के आधार स्तम्भ– डॉ0 हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
05– प्रतिनिधि हिन्दी निबन्धकार– तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
06– साहित्य में गद्य की नई विधायें– कैलाशचन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
07– हिन्दी रेखाचित्र– डॉ0 हरवंशलाल वर्मा, हिन्दी समिति उ0प्र0, लखनऊ
08– स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध एवं निबंधकार– डॉ0 बापूराव देसाई, चिंतन प्रकाशन, नौबस्ता, कानपुर
09– हिन्दी साहित्य में निबंध एवं निबंधकार– डॉ0 गंगा प्रसाद गुप्त
10– हिन्दी की हास्य व्यंग्य विधा का स्वरूप एवं विकास– इन्द्रनाथ मदान
11– हिन्दी के व्यक्तिक निबंध– रामचरण महेन्द्र
12– साहित्यिक विधायें : पुनर्विचार– हरिमोहन 17

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

बी0 ए0 (प्रथम वर्ष) प्रयोजनमूलक हिन्दी
प्रथम प्रश्न पत्र
भारत सरकार की राजभाषा नीति

पूर्णांक – 35

प्रथम प्रश्न –इस यूनिट में सभी 10 लघूत्तरीय प्रश्न अनिवार्य होंगे। ये प्रश्न प्रथम प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को स्पर्श करते हुए बनाये जायेंगे। 15 अंक

इकाई – (1.) हिन्दी का विकास एवं हिन्दी के राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान। 5 अंक
इकाई – (2.) राजभाषा अधिनियम– 1963, संशोधित – 1967, परवर्ती नियम – 1976। 5 अंक
इकाई – (3.) राष्ट्रपति के आदेश, राजभाषा–संकल्प, त्रिभाषा फार्मूला, अखिल भारतीय परीक्षाओं का वैकल्पिक माध्यम। 5 अंक
इकाई – (4.) हिन्दी प्रशिक्षण और प्रोत्साहन। 5 अंक

द्वितीय प्रश्न पत्र
हिन्दी का प्रायोगिक व्याकरण और वार्तालाप

पूर्णांक – 35

प्रथम प्रश्न – इस यूनिट में सभी 10 लघूत्तरीय प्रश्न अनिवार्य होंगे। ये प्रश्न द्वितीय प्रश्नपत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को स्पर्श करते हुए बनाये जायेंगे। 15 अंक
इकाई – (1.) हिन्दी भाषा की प्रकृति, अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी वाक्य संरचना नियम। 5 अंक
इकाई – (2.) ध्वनि विज्ञान, वर्णमाला, उच्चारण, लय और स्वर विन्यास। 5 अंक
इकाई – (3.) हिन्दी व्याकरण – लिंग, वचन, क्रिया, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय, परसर्ग। 5 अंक
इकाई – (4.) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, विभक्तियाँ, वर्तनी और विराम चिन्ह आदि का सही प्रयोग। 5 अंक

तृतीय प्रश्न पत्र
प्रायोगिक कार्य

पूर्णांक – 30

बी0 ए0 (द्वितीय वर्ष) प्रयोजनमूलक हिन्दी
प्रथम प्रश्नपत्र
हिन्दी में कार्यालयी और वाणिज्यिक पत्राचार

पूर्णांक – 35

प्रथम प्रश्न – इस यूनिट में सभी 10 लघुत्तरीय प्रश्न अनिवार्य होंगे। ये प्रश्न प्रथम प्रश्नपत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को स्पर्श करते हुए बनाये जायेंगे। 15 अंक

इकाई – (1) पत्र की अवधारणा, स्वरूप और प्रकार। 5 अंक

इकाई – (2) कार्यालयी पत्राचार – मूलपत्र, पत्रोत्तर, अधिसूचना, आदेश, पृष्ठांकन, अन्तर्विभागीय टिप्पणी, मानक प्रालेख। 5 अंक

इकाई – (3) व्यावसायिक एवं वाणिज्यिक पत्राचार–निविदा सूचनाएँ, रिक्तियों की सूचनाएँ, कोटेशन, रपट, इनवाइस बिल, बैंकिंग कार्यवाही, शिकायत और समझौते, बीमा विषयक पत्र। 5 अंक

इकाई – (4) विज्ञापन एवं कॉपी लेखन की प्रस्तावना, गुण, क्षेत्र एवं सम्भावनाएँ। 5 अंक

द्वितीय प्रश्न पत्र
टिप्पणी एवं आलेखन

पूर्णांक – 35 अंक

प्रथम प्रश्न – इस यूनिट में सभी 10 लघुत्तरीय प्रश्न अनिवार्य होंगे। ये प्रश्न द्वितीय प्रश्नपत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को स्पर्श करते हुए बनाये जायेंगे। 15 अंक

इकाई – (1) टिप्पणी लेखन : अवधारणा, स्वरूप, प्रकार, भाषा–शैली, विशेषताएँ। 5 अंक

इकाई – (2) आलेखन : अवधारणा, स्वरूप, प्रकार, भाषा–शैली, विशेषताएँ। 5 अंक

इकाई – (3) फाइल पद्धति, प्रकरण–निर्माण, सन्दर्भ–पत्रिकाएँ। 5 अंक

इकाई – (4) अभिलेख और पूरक पत्रों की पद्धति। 5 अंक

तृतीय प्रश्न पत्र
प्रायोगिक कार्य

पूर्णांक – 30 अंक

बी0 ए0 (तृतीय वर्ष) प्रयोजनमूलक हिन्दी
प्रथम प्रश्नपत्र
अनुवाद, दुभाषिया – प्रविधि, पारिभाषिक शब्दावली

पूर्णांक – 35

प्रथम प्रश्न –इस यूनिट में सभी 10 लघुत्तरीय प्रश्न अनिवार्य होंगे। ये प्रश्न प्रथम प्रश्नपत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को स्पर्श करते हुए बनाये जायेंगे। 15 अंक

इकाई – (1) अनुवाद : अवधारणा, प्रक्रिया, प्रकार, राजभाषा–अधिनियम। 5 अंक

इकाई – (2) दुभाषिया–प्रविधि : अवधारणा एवं स्वरूप, आशु अनुवाद की विशेषताएँ एवं महत्व, दुभाषिये के गुण एवं महत्व। 5 अंक

इकाई – (3) परिभाषिक शब्दावली की अवधारणा एवं विकास–यात्रा, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण प्रक्रिया के सिद्धान्त। 5 अंक

इकाई – (4) संक्षेपण एवं सम्पादन कलाए आशुलेखन : प्रक्रिया एवं प्रयोग। 5 अंक

द्वितीय प्रश्न पत्र
संचार माध्यम

पूर्णांक – 35

प्रथम प्रश्न – इस यूनिट में सभी 10 लघुत्तरीय प्रश्न अनिवार्य होंगे। ये प्रश्न द्वितीय प्रश्नपत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को स्पर्श करते हुए बनाये जायेंगे। 15 अंक

इकाई – (1) संचार–माध्यम–पृष्ठभूमि अवधारणा, स्वरूप एवं क्षेत्र। 5 अंक

इकाई – (2) भारत में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का विकास – भारत में रेडियो टेजीविजन का नेटवर्क तथा इनके जनसंचार के रूप में प्रसारण के मूल सिद्धान्त। 5 अंक

इकाई – (3) भारत में प्रिंट मीडिया का विकास, प्रेस विज्ञप्ति की मुख्य विषय वस्तु, संक्षिप्तीकरण, पारिभाषिक शब्दावली, समीक्षा और सम्पादन। टेलीप्रिन्टर, टेलेक्स, टेलीकान्फ्रेंसिंग–कार्य–प्रणाली। 5 अंक

इकाई – (4) टंकण यन्त्र, प्रकार, कम्प्यूटर। संचार–माध्यम–लेखन–प्रविधि एवं प्रूफ–शोधन। रपट–लेखन कला, भाषा–शैली। 5 अंक

तृतीय प्रश्न पत्र
प्रायोगिक कार्य

पूर्णांक– 30

29/6/19

संशोधित पाठ्यक्रम एम.ए. हिन्दी (संस्थागत) वर्ष 2019-20 से प्रभावी

सेमेस्टर प्रथम :-

1. पाठ्यक्रम प्रथम - हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. पाठ्यक्रम द्वितीय - प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य
3. पाठ्यक्रम तृतीय - नाटक और रंगमंच
4. पाठ्यक्रम चतुर्थ - प्रयोजन मूलक हिन्दी

सेमेस्टर द्वितीय :-

5. पाठ्यक्रम प्रथम - उत्तर माध्यकालीन काव्य
6. पाठ्यक्रम द्वितीय - कथा साहित्य
7. पाठ्यक्रम तृतीय - वैकल्पिक प्रश्न पत्र
   कथेत्तर गद्य साहित्य
   अथवा
   विशिष्ट रचनाकार (कोई एक)
   क 1. सूरदास
   ख 2. गोस्वामी तुलसीदास
   ग 3. जयशंकर प्रसाद
   घ 4. प्रेमचंद
   ङ 5. अज्ञेय
8. पाठ्यक्रम चतुर्थ - भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

सेमेस्टर तृतीय :-

9. पाठ्यक्रम प्रथम - आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)
10. पाठ्यक्रम द्वितीय - काव्य शास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)
11. पाठ्यक्रम तृतीय - पत्रकारिता प्रशिक्षण
12. पाठ्यक्रम चतुर्थ - प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी (पाठ्यक्रम पर आधारित)

सेमेस्टर चतुर्थ :-

13. पाठ्यक्रम प्रथम - छायावादोत्तर काव्य
14. पाठ्यक्रम द्वितीय - हिन्दी आलोचना
15. पाठ्यक्रम तृतीय - वैकल्पिक प्रश्नपत्र (कोई एक)
    क. विशिष्ट साहित्यधारा (भारतीय साहित्य)
    ख. विशिष्ट साहित्यधारा (कौरवी लोक साहित्य)
    ग. विशिष्ट साहित्यधारा (प्रवासी हिन्दी साहित्य)
    घ. विशिष्ट साहित्यधारा (प्राचीन भाषा साहित्य)(संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश)
    ड. लघु शोध प्रबन्ध

संस्थागत पाठ्यक्रम शिक्षण हेतु सामान्य निर्देश

1. आंतरिक एवं बाह्य परीक्षाएं क्रमशः 50-50 अंकों की होंगी।

2. आन्तरिक मूल्यांकन सतत् कक्ष शिक्षण के क्रम में प्रत्येक सत्र में निम्नानुसार होगा-

   1- दो सत्र परीक्षाएं, 30 अंक

   2- संगाष्ठी पत्र लेखन, प्रस्तुतीकरण 10 अंक

   3- क्विज टेस्ट, पुस्तकालय कार्य, गृहकार्य मूल्यांकन 10 अंक

3. संबंधित परीक्षाओं में सभी इकाइयों (यूनिट) से अनिवार्यतः प्रश्न पूछे जाएंगे। शिक्षण इकाइयों (यूनिट) के क्रम में ही कराया जाएगा (जिससे आन्तरिक परीक्षा के लिए सुविधा रहेगी)।

4. आन्तरिक परीक्षा हेतु शिक्षण में आधार सामग्री, आलोचनात्मक सामग्री, शोध पत्र-पत्रिकाओं, साहित्यक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं पर आधारित अध्ययन कराया जाएगा।

5. आन्तरिक परीक्षाओं हेतु प्रश्नपत्र से संबंधित शोध पत्रों को अध्ययन में शामिल करना होगा, इसके लिए इस प्रश्न पत्र से संबंधित कम से कम दो शोध पत्रों को छात्र-छात्राओं को सन्दर्भ के रूप में समझाया जाए तथा अध्ययन सामग्री में शामिल किया जाए।

6. बाह्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों में पूछे जाने वाले अंक निर्धारण का प्रारूप प्रत्येक पाठ्क्रम के अंत में दिया गया है। बाह्य परीक्षा के प्रश्न पत्र तदनुरूप रहेंगे। आंतरिक परीक्षाओं में बाह्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों के प्रारूप से विद्यार्थियों का परिचय हो जाना चाहिए।

7. प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी हेतु वर्ष में प्रकाशित साहित्यिक पुस्तकों-पत्रिकाओं, शोध पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख/साहित्यिक गतिविधियों, साहित्यिक संस्थाओं की गतिविधियों पर आलेख/प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग/भाषा विज्ञान एवं राजभाषा के प्रयोग/पत्रकारिता संबंधी विषयों में प्रयोग, शब्दकोश निर्माण संबंधी प्रयोग/अनुवाद संबंधी प्रयोग शामिल होंगे। विद्यार्थी को उक्त में से कम से कम दो गतिविधियों में शामिल रहना होगा तथा संबंधित विषय पर कम से कम 10 पृष्ठों का एक आलेख विभाग में प्रस्तुत करना होगा।

8. प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी संबंधी मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा और संबंधित प्रश्न भी छात्र-छात्राओं से पूछे जाएंगे। विषय का निर्धारण समयावधि को देखते हुए संबंधित आन्तरिक शिक्षक द्वारा किया जाएगा और समय सारिणी में मौखिकी का अन्य प्रश्नपत्रों की भांति निर्धारण होगा और अनिर्वायतः तत्संबंधित विषय पर कक्षाएं कराई जाएंगी।

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम प्रथम)
हिन्दी साहित्य का इतिहास

एम0ए0 हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य तथा हिन्दी पद्य का समेकित अध्ययन करना अपेक्षित है। अध्ययन की इस प्रक्रिया में उन्हें हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विविध विचाराधाराओं, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, कवियों तथा उनकी रचनाओं की जानकारी अवश्यक है। साथ ही सभी युगों के नामकरण, काल विभाजन के संदर्भ में कौन-कौन से बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया तथा किन आधारों पर नामकरण किया गया इसकी जानकारी भी होनी चाहिए। इन्हीं सब आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास के पाठ्यक्रम का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई 1

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण, हिन्दी साहित्य के इतिहास के लेखन की परम्परा।

इकाई 2

आदिकाल की पृष्ठभूमि, (नाथ, सिद्ध और जैन साहित्य) रासो काव्य एवं फुटकर लौकिक साहित्य (विद्यापति और अमीर खुसरो)

इकाई 3

भक्तिकाल की परिस्थितियाँ, भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रमुख धाराएँ (संत काव्यधारा, सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्ति काव्य और राम भक्ति काव्य)

रीतिकालीन कविता की परिस्थितियां, प्रमुख प्रवृत्तियां, धाराएँ (रीति सिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त)

इकाई 4

आधुनिक साहित्य की परिस्थितियां, विचाराधाराएं, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता।

इकाई 5

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य की प्रमुख विद्याओं का परिचय, निबन्ध, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं अन्य गद्य विधाएं (संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रावृतान्त)

निबन्धात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2 =	10 अंक
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2 =	10 अंक
योग	=	50 अंक

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहु विकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम द्वितीय)
प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य

हिन्दी के आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि में अपभ्रंशा का बड़ा योगदान है। आदिकालीन काव्य, प्रबंध, मुक्तक आदि अनेक काव्य रूपों में रचा गया है तथा इसकी अभिव्यंजना अपभ्रंश, अवहटठ तथा देशी भाषा में की गई है। इस साहित्रू ने परवर्ती कालाओं को प्रभारित करने में सक्रिय: तथा सक्षम भूमिका का निर्वाह किया है। अतः परवर्ती काल के साहित्य का अध्ययन किए बिना इस काल के साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। पूर्व मध्यकालीन (भक्तिकालीन) साहित्य लोक-जागरण और लोक-मंगल से परिपूरित था। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उस समय के साहित्य में भाषा तथा कला के सौन्दर्य को परखने तथा समाज और संस्कृति को जानने के लिए आदिकालीन व भक्तिकालीन कविता का अध्ययन आवश्यक है।

(इस पाठयक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1 चंबरदायी-पद्मावती समय, संपादितः हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं नामवर सिंह।

इकाई 2 कबीर : कबीर ग्रन्थावली-संपादक, डॉ0 श्यामसुन्दर दास-50 साखियां (प्रारंभिक)

इकाई 3 मलिक मुहम्मद जायसी - पद्मावत - संपादक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागमती वियोग खण्ड।
सूरदास- भ्रमरगीत सार - संपादक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
7, 8, 23, 30, 41, 42, 52, 57, 64, 69, 70, 85, 90, 94, 97, 101, 104, 105, 116, 134, 136, 143, 155, 166, 186, 194, 210, 220, 221

इकाई 4 तुलसीदास : राचरित मानस, गीता प्रेस (उत्तराखण्ड के आरंभिक 40 दोहे तथा चौपाइयां)

इकाई 5 **द्रुतपाठ :-**
विद्यापति, अमीर खुसरा, नानक, गोरखनाथ, मीराबाई, रैदास, कुंभनदास।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके साहित्यिक परिचय से संबंधित प्रश्न होंगे। निबन्धात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों से नहीं पूछे जायेंगे।

व्याख्या	2 X 7 ½	= 15 अंक
निबन्धात्मक प्रश्न	1 X 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	= 10 अंक
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	= 10 अंक
योग		= 50 अंक

नोट :- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से दो व्याख्या करनी होंगी।
2. व्यायाख्याएं चंदवरदायी, कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास के चयनित काव्य में से पूछी जाएगी। निबन्धात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।
3. लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहु विकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम तृतीय)

नाटक और रंगमंच

नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण तथा प्राचीन विधा है। आचार्य भरत के नाट्य चिन्तन से लेकर आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य चिन्तन के प्रसिद्ध चिन्तकों का अध्ययन नाटक के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है। नाटक यथार्थ एवं कल्पना के मेलजोल से विलक्षण रूप धारण कर द्रष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन तो प्रदान करता ही है साथ ही साथ अपने साध्य में दृश्य होने के कारण रंगमंच से भी सीधे जुड़ा हुआ है। हिन्दी नाटक में ऐतिहासिकता के साथ-साथ जीवन की विसंगतियाँ और विद्रूपताएं भी दृष्टिगत होती हैं। इन सबको जानने-समझने के लिए इस विधा का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई 1

नाटक तथा रंगमंच का स्वरूप।

नाट्य भेद-भारतीय रूपक-उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)

इकाई 2

नाट्य विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन।

रंगमंच के प्रमुख प्रकार, रंगशिल्प, रंग सम्प्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)

रंगमंच-लोक नाट्य, संस्थाएं), (पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, और नुक्कड़ नाटक।

नाटकों का अध्ययन

इकाई 3	1.	अंधेर नगरी	-	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
	2.	चन्द्रगुप्त	-	जयशंकर प्रसाद
इकाई 4	3.	लहरों के राजहंस	-	मोहन राकेश
	4.	अंधायुग	-	धर्मवीर भारती

इकाई 5 **एकांकी**

एक घूंट - जयशंकर प्रसाद, चारूमित्रा - राजकुमार वर्मा

अण्डे के छिलके - मोहन राकेश आखिरी आदमी - धर्मवीर भारती

द्रुतपाठ :-

लक्ष्मी नारायण लाल, रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचन्द्र माथुर, सुरेन्द्र वर्मा, शंकर शेष, हबीब तनवीर।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित सामान्य प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	-	2 x 7 $^{1}/_{2}$	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 1	= 10 अंक
योग			= 50 अंक

नोटः- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

2 :- इकाई 01, 02 एवं 05 से निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई 03 एवं 04 से व्याख्या एवं निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

3 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

~~संदर्भ ग्रन्थ :- नाटक और रंगमंच~~

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम चतुर्थ)

प्रयोजनमूलक हिन्दी

आज हिन्दी का प्रयोग साहित्य, सृजनात्मक लेखन के साथ-साथ कार्यालय, पत्रकारिता, कम्प्यूटर तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी अधिकाधिक हो रहा है। कार्यालयी हिन्दी की संरचना साहित्यिक हिन्दी तथा सृजनात्मक हिन्दी से अलग है। इसी तरह इन्टरनेट तथा अनुवाद में हिन्दी का स्वरूप अलग है। हिन्दी के इन विविध रूपों का अध्ययन करना हिन्दी के आधुनिक स्वरूप को जानने, समझने के लिए आवश्यक है। इस प्रक्रिया में कार्यालयी हिन्दी के औपचारिक लेखन के स्वरूप का अध्ययन अपेक्षित है, साथ ही, अनुवाद के विविध रूप, प्रक्रिया एवं प्रविधि तथा उनके क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

इकाई 1 कामकाजी हिन्दी : हिन्दी के विभिन्न रूप-सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, मातृ भाषा, कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, टिप्पण, संक्षेपण, पल्लवन।

इकाई 2 जनसंचार माध्यमों के लिए हिन्दी लेखन, रिपोर्ट-लेखन, संपादकीय, अग्रलेख, लघु टिप्पणियाँ।

इकाई 3 फीचर लेखन, विविध दैनिकों, रेडियो चैनलों, इंटरनेट, मोबाइल, फिल्मों, टीवी चैनलों में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप, जनसंपर्क एवं विज्ञापनों में हिन्दी।

इकाई 4 **हिन्दी कम्प्यूटिंग**

कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब-पब्लिशिंग का परिचय।

इण्टरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इण्टरनेट समय मितव्ययता के सूत्र, वेब-पब्लिशिंग, इण्टरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेटस्केप, लिंक, ब्राउजिंग, ई-मेल भेजना/प्राप्त करना

इकाई 5 **अनुवाद**

अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि, कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद।

अनुवाद का अन्य क्षेत्र : वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विधि, साहित्य, कार्यालयी।

निबंधात्मक प्रश्न 2 x 15	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न 5 x 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1	= 10 अंक
योग	**= 50 अंक**

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ :- प्रयोजनमूलक हिन्दी

1	प्रयोजनमूलक हिन्दी	- विनोद गोदरे
2	प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग	- दंगल झाल्टे
3	टिप्पणी प्रारूप	- शिवनारायण चतुर्वेदी
4	प्रालेखन प्रारूप	- शिवनारायण चतुर्वेदी
5	राजभाशा विविधा	- माणिक मृगेश
6	व्यावसायिक हिन्दी	- रहमतुल्लाह
7	पत्र-व्यवहार निर्देशिका	- भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ
8	प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन	- भोलानाथ तिवारी
9	व्यावहारिक हिन्दी और स्वरूप	- कृष्ण कुमार गोस्वामी
10	प्रयोजनमूलक हिन्दी	- (संपा0) कृष्ण कुमार गोस्वामी

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम प्रथम)

उत्तर मध्यकालीन काव्य

जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है। चार पुरुषार्थ में काम का एक स्तम्भ होना गहरे अर्थ की व्यंजना करता है जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े हैं, वैसे ही रति और रीति भी। जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृत्ति है, वहीं 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है। हिन्दी साहित्य का रीतिकाल इन्हीं मनोवृत्तियों से जुड़ा हुआ है। तद्युगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के श्रृंगारिक रूप की संपृक्ति बढ़ी। रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हुआ। जीवन के मधुर पक्ष को भी ठीक से समझने के लिए रीति अथवा श्रृंगारकाल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1 बिहारी 40 प्रारम्भिक दोहे (बिहारी बोधिनी, संपा0 लाला भगवानदीन)

इकाई 2 घनानंद 25 प्रारम्भिक कवित्त (घनानंद कवित्त, संपा0 विश्वनाथ प्रताप मिश्र)

इकाई 3 केशवदास 25 प्रारम्भिक कवित्त (रामचन्द्रिका से)

इकाई 4 भूषण 15 प्रारम्भिक दोहे (भूषण ग्रंथावली संपा0 डॉ0 भगीरथ दीक्षित)

इकाई 5 द्रुतपाठ

देव, रसखान, सेनापति, पद्माकर, मतिराम, गिरधर कविराय, गुरू गोविंद सिंह।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	-	2 X 7 ½	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 X 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 X 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 X 1	= 10 अंक
योग			= 50 अंक

नोट 1:- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

2 :- व्याख्याएँ बिहारी, घनानंद, केशवदास एवं भूषण के चयनित काव्य में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।

3 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम द्वितीय)

कथा-साहित्य

हिन्दी गद्य की विधाओं में कहानी एवं उपन्यास सर्वाधिक विकसित तथा लोकप्रिय है। सम्प्रति उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है, अतः इस विधा का विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

उपन्यास एवं कहानी का स्वरूप, इतिहास, प्रमुख शैलियाँ, हिन्दी के प्रतिनिधि उपन्यासकारों एवं कहानीकारों का वस्तु शिल्पगत वैशिष्ट्य।

इकाई 2

1. गोदान - प्रेमचंद
2. मैला आंचल - फणीश्वर नाथ 'रेणु'

इकाई 3

1. बाणभट्ट की आत्मकथा - हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'

इकाई 4

हिन्दी कहानी

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (उसने कहा था), जयशंकर प्रसाद (पुरस्कार), प्रेमचन्द (कफन), निर्मल वर्मा (परिन्दे), गिरिराज किशोर (अन्तर्दाह), से0 रा0 यात्री (टापू पर अकेले)।

इकाई 5 द्रुतपाठ

अमृतलाल नागर, श्रीलाल शुक्ल, शैलेश मटियानी, कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डेय, चित्रा मुद्गल, मन्नू भण्डारी।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्याएँ	-	2 x 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 1	=	10 अंक
योग	-		=	50 अंक

नोट 01:- प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी। 02 :- व्याख्याएँ इकाई संख्या 02, 03 से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछे जाएंगे।

03 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम तृतीय)

कथेतर गद्य साहित्य

हिन्दी साहित्य की विधाओं में कथा साहित्य एवं नाट्य के अतिरिक्त सृजनधर्मी रचनाकारों द्वारा लिखित अन्य विधाओं का अध्ययन भी अपेक्षित है। यह प्रश्नपत्र इसी कमी को पूरा करता है जिसमें साहित्य की कई नवीन विधाओं का अध्ययन होगा।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

निबंध : श्रद्धा-भक्ति - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
देवदारू - हजारी प्रसाद द्विवेदी
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है - विद्यानिवास मिश्र
निशाद बांसुरी - कुबेरनाथ राय

इकाई 2

व्यंग्य : हरिशंकर परसाई - इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर
शरद जोशी - होना कुछ नहीं का
श्रीलाल शुक्ल - कुत्ते और कुत्ते
रवीन्द्र नाथ त्यागी - एक दीक्षांत भा-ण

इकाई 3

रेखाचित्र : दस तस्वीरें - जगदीश चन्द्र माथुर

इकाई 4

घुमक्कड़ शास्त्र - राहुल सांकृत्यायन

इकाई 5 द्रुतपाठ :

महावीर प्रसाद द्विवेदी, कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर', पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', डॉ0 नगेन्द्र, ज्ञान चतुर्वेदी, ओम प्रकाश वाल्मीकि।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके साहित्यिक परिचय से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	-	2 X 7 $^{1}/_{2}$	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 X 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 X 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 X 1	= 10 अंक
योग			= 50 अंक

नोट 01:- **प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।**
02 :- व्याख्याएँ इकाई संख्या 01 से 02 तक में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त रचनाकारों पर आधारित होंगे।
03 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम तृतीय)
विशिष्ट रचनाकार (कोई एक)

हिन्दी के उन कालजयी रचनाकारों का अध्ययन करना आवश्यक है, जिन्होंने चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है और जिनका लेखन आज भी प्रासंगिक है। अतः इन रचनाकारों की साहित्यिक दृष्टि को समझना आवश्यक है।

कबीरदास

पाठ्यग्रंथ : (क) कबीर ग्रन्थावली - सं0 डॉ0 श्यामसुन्दर दास

सहायक ग्रंथ :

1 कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी।
2 कबीर दर्शन - रामजीलाल सहायक।
3 कबीर : एक नई दृष्टि - डॉ0 रघुवंश।
4 कबीर का रहस्यवाद - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
5 हिन्दी संत काव्यों में परम्परा और प्रयोग - डॉ0 भगवान देव पाण्डेय।
6 कबीर एक अनुशीलन - डॉ0 रामकुमार वर्मा।
7 कबिरा खड़ा बाजार में - भीष्म साहनी।
8 कबीर का रहस्यवाद - रामकुमार वर्मा।
9 कबीर - सं0 विजयेन्द्र स्नातक।

सूरदास

पाठ्यग्रंथ : सूरसागर - सार (संपूर्ण) - सं0 डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, नवीन संस्करण।

सहायक ग्रंथ :-

1 सूरदास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2 सूर-साहित्य - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3 अ-टछाप और वल्लभ संप्रदाय - डॉ0 दीनदयाल गुप्ता।
4 सूर और उनका साहित्य - डॉ0 हरिवंश लाल शर्मा।
5 हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका - डॉ0 रामनरेश वर्मा।
6 सूरदास और कृष्ण भक्ति काव्य - डॉ0 मैनेजर पाण्डेय।
7 सूरदास - नंददुलारे वाजपेयी।
8 हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य - मधुर भाव की उपासना - प्रो0 पूर्णमासी राय।
9 मीरा का काव्य - डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
10 मीराबाई - डॉ0 श्रीकृष्ण लाल।
11 भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य - मैनेजर पाण्डेय।

गोस्वामी तुलसीदास

पाठ्यग्रंथ :

1 रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड - संपूर्ण) 326 दोहा)
2 कवितावली - (केवल उत्तरकाण्ड, कुल 183 छंद)
3 विनय पत्रिका - चुने हुए कुल 51 पद (पद संख्या :- 1, 3, 4, 5, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 73, 76, 78, 79, 85, 88, 89, 90, 94, 97, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 111, 113, 114, 115, 121, 124, 155, 156, 158, 159, 160, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 169, 172, 174, 185, 198, 201, 272)।

सहायक ग्रंथ :–

1 गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2 तुलसीदास – डॉ0 माताप्रसाद गुप्त।
3 मानस दर्शन – डॉ0 श्रीकृष्णलाल।
4 तुलसी और उनका युग – डॉ0 राजपति दीक्षित।
5 तुलसी की जीवन भूमि – चन्द्रवलि पाण्डेय।
6 रामकथा का विकास – कामिल बुल्के हिन्दी परिषद्, प्रयाग
7 मानस की रूसी भूमिका (हिन्दी अनुवाद) – वारान्निकोव, विद्यामंदिर, लखनऊ
8 सन्त तुलसीदास और उनका संदेश – डॉ0 राजपति दीक्षित।
9 गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और उसका महत्व – डॉ0 ज्ञानवती त्रिवेदी।
10 लोकवादी तुलसी – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
11 तुलसीदास – ग्रियर्सन।
12 तुलसी – उदयभानु सिंह
13 तुलसी सन्दर्भ – डॉ0 नगेन्द्र

जयशंकर प्रसाद

पाठ्य ग्रंथ :

1 कामायनी (सम्पूर्ण)
2 ध्रुवस्वामिनी
3 कहानी : आकाशदीप, गुंडा, देवरथ।
4 काव्य कला तथा छायावाद और यथार्थ (प्रथम निबन्ध और अन्तिम निबन्ध)

सहायक ग्रंथ :–

1 जयशंकर प्रसाद – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।
2 नया साहित्य : नये प्रश्न – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।
3 जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला – डॉ0 रामेश्वर खण्डेलवाल।
4 प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास।
5 प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेमशंकर।
6 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।
7 प्रसाद के जीवन और साहित्य – डॉ0 रामरतन भटनागर।
8 हिन्दी नाटक – डॉ0 बच्चन सिंह।
9 प्रसाद का गद्य साहित्य – डॉ0 राजमणि शर्मा।
10 प्रसाद : दुखान्त नाटक – रामकृष्ण शुक्ल श्रीमुख।
11 नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान – डॉ0 वशिष्ठनागर त्रिपाठी।
12 प्रसाद साहित्य में अतीत चिन्तन – डॉ0 धर्मपाल कपूर
13 कामायनी का पुनर्मूल्याकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
14 प्रसाद साहित्य सर्जना के आयाम – माधरी सुबोध (संपादक)
15 प्रसाद सन्दर्भ – प्रमिला शर्मा (संपादक)

प्रेमचंद

(क) रंगभूमि (ख) प्रेमाश्रम
(ग) गबन (घ) मानसरोवर (खण्ड एक)

सहायक ग्रंथ

1 प्रेमचंद – घर में – शिवरानी देवी।

2 प्रेमचंद : एक विवेचन – इन्द्रनाथ मदान।
3 प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा।
4 प्रेमचंद : कलम का सिपाही –अमृतराय।
5 प्रेमचंद – मदनगोपाल
6 प्रेमचंद : जीवन, कला एवं कृतित्व – हंसराज रहबर।
7 प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन – नंददुलारे वाजपेयी।
8 कथाकार प्रेमचंद – मन्मथनाथ गुप्त।
9 प्रेमचंद : एक अध्ययन – राजेश्वर गुरु।
10 प्रेमचंद की उपन्यास कला – जनार्दन प्रसाद राय।
11 प्रेमचंद एवं भारतीय किसान – रामवक्ष।
12 प्रेमचंद : गंगा प्रसाद विमल।
13 प्रेमचंद के साहित्य सिद्धान्त – नरेन्द्र कोहली।
14 प्रेमचंद : एक कला व्यक्तित्व – जैनेन्द्र।
15 प्रेमचंद स्मृति – सं0 अमृतराय।
16 प्रेमचंद : चिंतन और कला – सं0 इन्द्रनाथ मदान।
17 प्रेमचंद और गोर्की – श्री मधु।
18 हिन्दी उपन्यास : विशेषतः प्रेमचंद : नलिन विलोचन शर्मा।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

पाठ्य ग्रंथ : 1 शेखर एक जीवनी (भाग 1, 2), 2 आंगन के पार द्वार, 3 अज्ञेय की प्रतिनिधि कहानियाँ।

सहायक ग्रंथ :–

1 अज्ञेय का कथा साहित्य – ओम प्रभाकर।
2 अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि – सत्यपाल चुघ।
3 अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
4 शिखर से सागर तक – डॉ0 रामकमल राय।
5 अज्ञेय और नयी कविता – डॉ0 चन्द्रकला त्रिपाठी।
6 अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम – डॉ0 नवीन चन्द्र लोहनी।
7 अज्ञेय कवि और काव्य – डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद
8 अज्ञेय का कवि कर्म – कृष्णदत्त पालीवाल
9 अज्ञेय का काव्य भाव और शिल्प – डॉ0 शंकर बसंत मुद्गल
10 आज के लोकप्रिय कवि अज्ञेय – विद्यानिवास मिश्र
11 अज्ञेय एक अध्ययन – भोला भाई पटेल
12 अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ0 पुष्पा शर्मा

व्याख्या	–	2 X 7 $^{1}/_{2}$	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 X 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 X 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	= 10 अंक
योग			= **50 अंक**

नोट 01 :– विशेष चयन के रूप में एक साहित्यकार का साहित्य पढ़ा जाएगा।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– विशिष्ट रचनाकार

1	भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य	– मैनेजर पाण्डे
2	महाकवि सूरदास	– आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
3	प्रसाद सन्दर्भ	– सम्पादक : प्रमिला शर्मा
4	प्रसाद साहित्य : सर्जना के आयाम	– सम्पादक : माधुरी सुबोध
5	गोस्वामी तुलसीदास	– सम्पादक : रामचन्द्र शुक्ल
6	तुलसीदास	– डॉ0 माताप्रसाद गुप्त
7	तुलसी और उनका युग	– डॉ0 राजपति दीक्षित
8	तुलसी सन्दर्भ	– डॉ0 नगेन्द्र
9	तुलसी	– उदय भानु सिंह
10	जयशंकर प्रसाद	– नन्द दुलारे वाजपेयी
11	कामायनी का पुर्नमूल्यांकन	– रामस्वरूप चतुर्वेदी
12	अज्ञेय कवि और काव्य	– राजेन्द्र प्रसाद
13	अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम	– प्रो0 नवीन चन्द्र लोहनी
14	अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प विधि	– डॉ0 सत्यपाल
15	अज्ञेय का काव्य – भाव एवं शिल्प	– डॉ0 शंकर बसंत मुद्गल
16	आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : अज्ञेय	– विद्यानिवास मिश्र
17	अज्ञेय : एक अध्ययन	– भोला भाई पटेल
18	अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम	– डॉ0 पुष्पा शर्मा
19	कामायनी रूपक	– डॉ0 विनय
20	कबीर	– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
21	नदी के द्वीप में वैयक्तिक स्वच्छंदतावाद	– आशा अरोरा
22	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	– रामस्वरूप चतुर्वेदी
23	प्रसाद साहित्य में अतीत चिन्तन	– डॉ0 धर्मपाल कपूर

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम चतुर्थ)

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषा विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाईयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतरसंबंधों के विन्यास को आलौकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है अपितु भाषा-विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है। भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

इकाई 1

भाषा और भाषा विज्ञान : भाषा की परिभाषा, भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं अध्ययन की दिशाएँ, (वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रायोगिक) विश्व के भाषा परिवार।

इकाई 2

स्वन प्रक्रिया : स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएं, वाग्वयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था- खण्ड्य, खंड्येतर, स्वन-नियम।

अर्थविज्ञान : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, शब्द भेद, अर्थ परिवर्तन, दिशाएं एवं कारण।

इकाई 3

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ-वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ-पालि, प्राकृत-शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण, द्रविड़ परिवार की भाषाओं का सामान्य परिचय।

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियों का सामान्य परिचय। खड़ीबोली, अवधी और ब्रज की ध्वनि और रूप सम्बन्धी विशेषताएँ।

इकाई 4

हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी वर्तनी और उच्चारण के सिद्धान्त। हिन्दी शब्द रचना-उपसर्ग, प्रत्यय, समास।

रूपरचना : लिंग, वचन और कारक-व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप।

हिन्दी वाक्य रचना : पदक्रम और अन्विति।

इकाई 5

देवनागरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण।

निबंधात्मक प्रश्न/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	=	10 अंक
योग		=	**50 अंक**

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अतिलघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम प्रथम)
आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए हैं। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार सारणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मुकम्मल मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवाहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1	मैथिलीशरण गुप्त	-	साकेत का नवम सर्ग
इकाई 2	जयशंकर प्रसाद	-	कामायनी (चिन्ता और आनन्द सर्ग)
इकाई 3	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	-	राम की शक्ति पूजा
इकाई 4	सुमित्रानंदन पन्त	-	नौका विहार, परिवर्तन, मौन निमन्त्रण,
	महादेवी वर्मा	-	'यामा' के प्रारम्भिक पाँच गीत

इकाई 5 द्रुतपाठ - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

1.	व्याख्याएँ	2 x 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
2.	निबंधात्मक प्रश्न	1x 15	=	15 अंक
3.	लघु उत्तरीय प्रश्न	5 x 2	=	10 अंक
4.	अति लघूत्तरीय प्रश्न	10 x 1	=	10 अंक
		योग	=	50 अंक

नोट 01:- प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

02 :- निबंधात्मक प्रश्न एवं व्याख्यान इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछी जाएंगी।

03 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम द्वितीय)

भारतीय काव्यशास्त्र

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविकता परखी जा सके। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता से समझने और जानने-परखने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है। वहीं पाश्चात्य काव्य शास्त्र का अध्ययन भी आवश्यक है।

इकाई 1 :- काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन।
अलंकार की अवधारणा, अलंकार सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।
रीति की अवधारणा, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 2 :- रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।
वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 3 :- ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।
औचित्य की अवधारणा, औचित्य सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 4 :- **प्लेटो** - काव्य सिद्धान्त।
अरस्तू -अनुकरण सिद्धान्त, विरेचन सिद्धान्त।
लोंजाइनस -उदात्त की अवधारणा।

इकाई 5 :- **आई0ए0 रिचर्डस** - संवेगों का सन्तुलन।
क्रोचे -अभिव्यंजनावाद।
टी0एस0 इलियट -निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त।

निबंधात्मक प्रश्न	2 x 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 x 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1	=	10 अंक
योग		=	50 अंक

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम तृतीय)

पत्रकारिता प्रशिक्षण

पत्रकारिता आज जीवन-समाज की धड़कन बन गई है। सिमटते विश्व में स्नायु-तंतुओं के समान काम कर रही है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मिडिया, इलैक्ट्रॉनिक मिडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। इसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। साक्षित्यिकता के साथ-साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है। पुनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है। अतः इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

इकाई 1 **प्रिन्ट पत्रकारिता**

पत्रकारिता का स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार,

हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास।

समाचार के मूल तत्व, समाचार के विभिन्न स्रोत।

संपादन कला के सामान्य सिद्धांतः शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार प्रस्तुतीकरण।

दृश्य सामग्री-कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स की व्यवस्था एवं फोटो पत्रकारिता।

इकाई 2

पत्रकारिता से संबंधित लेखन : संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, पुस्तक समीक्षा, खोजी पत्रकारिता।

इकाई 3 **इलैक्ट्रॉनिक पत्रकारिता**

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का उद्‌भव एवं विकास

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता :-

1. रेडिया की पत्रकारिता :- समाचार बुलेटिन सम्बन्धी सिद्धान्त, उनकी तकनीक, रेडियो बुलेटिनों के प्रकार।

2. टेलीविजन में समाचार संकलन, संपादन, प्रस्तुतीकरण।

3 इण्टरनेट की पत्रकारिता

इकाई 4

समाचार संकलन तकनीक :- 1. साक्षात्कार, 2. प्रेसवार्ता, 3. संसदीय रिपोर्टिंग, 4. विधि समाचार, 5. खेल समाचार, 6. भाषणों, बैठकों संगोष्ठियों आदि के समाचार तथा प्रेस विज्ञप्तियाँ 7. दुर्घटनाओं, आपदाओं, अपराधों की रिपोर्टिंग, खोजी पत्रकारिता, 8. एंकरिंग तकनीक

इकाई 5

रेडियो एवं टेलीविजन की तकनीक एवं उपकरण :-

1. माइक्रोफोन, रिकार्डर, मिक्सर, विडियो, कैमरा, प्रकाश संबंधी यंत्र/एनीमेशन और मल्टीमीडिया

निबंधात्मक प्रश्न	2 x 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 x 2 =	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 =	10 अंक
कुल योग	=	50 अंक

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम चतुर्थ)
प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी

आवश्यक निर्देश -

⇨ चतुर्थ प्रश्नपत्र प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी का है। इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी कम से कम 10 पृष्ठों का एक आलेख विभाग में प्रस्तुत करेगा। जिसकी विषयवस्तु निम्नांकित में से किसी एक पर केन्द्रित होगी।

⇨ तीन सेमेस्टर के चारों प्रश्नपत्रों के किसी भी विषय/साहित्यकार/उनकी रचना पर विशद् समीक्षा।

⇨ साहित्यिक पुस्तकों/शोध पत्र-पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।

⇨ साहित्यिक गतिविधियों/साहित्यिक संस्थाओं की गतिविधियों पर आलेख।

⇨ प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग/भाषा विज्ञान एवं राजभाषा के प्रयोग पर आलेख।

⇨ पत्रकारिता संबंधी विषयों में प्रयोग/शब्दकोश निर्माण संबंधी प्रयोग।

⇨ अनुवाद संबंधी प्रयोग पर आलेख।

⇨ साहित्यिक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।

⇨ इस प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र का मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा और प्रायोगिकी संबंधी प्रश्न भी छात्र-छात्राओं से पूछे जाएंगे। विषय का निर्धारण समयावधि को देखते हुए संबंधित आन्तरिक शिक्षक द्वारा किया जाएगा और समय सारणी में इसके लिए भी समय का अन्य प्रश्नपत्रों की भांति निर्धारण होगा और अनिवार्यतः तत्संबंधित विषय पर कक्षाएं कराई जाएंगी।

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम प्रथम)

छायावादोत्तर काव्य

छायावादी कृतित्व में यथार्थ और स्वप्न दोनों की समान स्थिति थी। राष्ट्रीय-चेतना और सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति अपनी समस्त शक्ति-सामर्थ्य तथा कतिपय नवीन प्रयोगवादिता के साथ छायावादोत्तर-काव्य में विकसित होती रही। यहाँ प्रयोग और प्रगतिशीलता के स्वर जोर पकड़ते गए जिसके बीज-बिन्दु छायावाद में पड़ चुके थे। औद्योगीकरण के साथ-साथ शोषण की वृत्ति तथा अन्य सामाजिक विद्रूपताओं ने प्रगतिशील साहित्यांदोलनों को बढ़ावा दिया। नये मार्ग की अन्वेषी विचारधारा ने प्रयोगवादी काव्यधारा के रूप में अपने को विकसित किया। स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया। स्वप्न अधूरे रहे, संकल्प टूटे, आक्रोष और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित हुई। विज्ञान ने बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरूप नये-नये बिंब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना-रूप विकसित हुए। अंतर्विरोधी स्थितियों ने मूल्य-विघटन, तनाव-संक्रमण, मोहभंग की स्थिति पैदा की, जिसकी अभिव्यंजना विविध रूपों में हुई। वर्तमान समस्याओं, संवेदनाओं की व्यापकता विश्वजनीन हो गई है। इस वैश्विक-संदर्भ की जानकारी और समझदारी के लिए छायावादोत्तर तथा समकालीन साहित्य का विशेष अध्ययन परमावश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

छायावादोत्तर काव्य की विभिन्न विचारधाराएं :- राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का काव्य, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता, नवगीत, अकविता, उत्तर आधुनिकतावाद

इकाई 2 प्रमुख कवि तथा उनकी काव्य प्रवृत्तियाँ।

इकाई 3
- अज्ञेय - असाध्य वीणा, कलगी बाजरे की, नदी के द्वीप, बावरा अहेरी।
- मुक्तिबोध - अंधेरे में।

इकाई 4
- नागार्जुन - कालिदास, बहुत दिनों के बाद, अकाल और उसके बाद।
- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - कुआनो नदी, जंगल का दर्द, एक सूनी नाव, बांस का पुल।

इकाई 5 द्रुतपाठ :-

रघुवीर सहाय, 'धूमिल', दुष्यन्त कुमार, धर्मवीर भारती, लीलाधर जगूड़ी, कुँअर बेचैन।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्याएँ	-	2 x 7 $^1/_2$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 1	=	10 अंक
योग	-			50 अंक

नोट 01 :- व्याख्याएं इकाई 03 एवं 04 से पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01 से 04 तक पूछे जाएंगे।
02 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।
03 :- प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार में से दो व्याख्या करनी होंगी।

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम द्वितीय)
हिन्दी आलोचना

हिन्दी साहित्य की कुछ विधाएँ इतनी विकसित हो गयी हैं कि उनके स्वतंत्र सघन अध्ययन के लिए पृथक वैकल्पिक प्रश्नपत्र की आवश्यकता है। हिन्दी आलोचना ऐसी ही एक विधा है। इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आलोचक हो सकता है, जो हिन्दी पठन-पाठन का मूल प्रायोजन है।

इकाई 1

हिन्दी आलोचना का स्वरूप और विकास

इकाई 2

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की साहित्यिक मान्यताएँ

इकाई 3

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की साहित्यिक मान्यताएँ

इकाई 4

रामधारी सिंह दिनकर और अज्ञेय की साहित्यिक मान्यताएं

इकाई 5

द्रुतपाठ- महावीर प्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र, विजयदेव नारायण शाही, नंद दुलारे वाजपेयी, गजानन, माधव मुक्तिबोध। द्रुतपाठ हेतु चयनित रचनाकारों में से केवल लघु उत्तरीय प्रश्न ही पूछे जाएंगे।

निबंधात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	=	10 अंक
योग		=	50 अंक

नोट 01 :- इकाई 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

02 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम तृतीय (ड))

लघुशोध प्रबन्ध

पूर्णांक 100 अंक

(संस्थागत छात्रों के लिए)

आवश्यक निर्देश -

छात्र/छात्रा विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक के सहयोग एवं अनुमति से लघु शोध प्रबन्ध के विषय का चयन करेगा/करेगी। लघु शोध प्रबन्ध लगभग 50 पृष्ठों का होना चाहिए। लघु शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा होगा।

प्रबन्ध लेखन	- 50 अंक
मौखिकी	- 50 अंक

हिंदी विभाग

M.A. I sem I Paper (1025) (हिंदी साहित्य का इतिहास)

1. Programe Outcome (PO) पाठ्यक्रम हिंदी साहित्य के प्राथमिक स्रोतों का परिचयात्मक विवरण देता है। हिंदी साहित्य के आदि मध्य एवं आधुनिक साहित्य इतिहास लेखन की परम्परा प्रस्तुत करता है। साहित्य के इतिहास लेखन को गार्सा द तासी से लेकर डा. गणपति चन्द्र गुप्त तक की आलोचनात्मक शोधपरक दृष्टि में तोलता चलता है

P.O. I पाठ्यक्रम का उद्देश्य हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन को पटल पर लाना व तुलनात्मक निष्कर्षों तक आना है।

P.O. 2. पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को साहित्य के विकास से परिचित कराना है।

P.O.3. पाठ्यक्रम साहित्यिक धाराओं का वर्गीकरण बताता है।

P.O. 4. पाठ्यक्रम साहित्यिक प्रवृत्तियों का नामकरण करता है।

P.O. 5. पाठ्यक्रम द्वारा छात्र छात्राएं आदिकाल से अकविता तक के रचनाकारों व उनकी कृतियो और उनके जीवन वृत से परिचित होते हैं।

Program Specific Outcome (PSO) पाठ्यक्रम ज्ञान का अनुकूलन करता है व आलोचनात्मक शोध दृष्टि उत्पन्न करता है।

Course Outcome. 1. रचनाकारों के जीवन से कुछ सीमा तक परिचित होना
2. रचनाओं की समयावधि, प्रामाणिकता से परिचित होना
3. काव्यधाराओं के वर्गीकरण के आधार समझना
4. भारतवर्ष के इतिहास से साहित्य को सम्बद्धता

Assessment/Evaluation Method
for semester System

External Exam - 50 Marks
Internal Exam - (1) 20 (15+5) = 20 (15+5) = 40 marks
(2) Assignment - 10 Marks
Total - 40+10 = 50 Marks

हिंदी विभाग

M.A. तृतीय सत्र आधुनिक साहित्य पाठ्यक्रम

Dr Vandana Sharma

1. Program Outcome (PO) अधिगृहीत पाठ्यक्रम आधुनिक काव्य है जिसमें भारतेंदु युग के पश्चात के रचनाकारों की कुछ रचनाओं को छात्र छात्राओं के हेतु रखा गया है। ये रचनाएँ उन रचनाकारों की अति प्रसिद्ध रचनाएं हैं जिनके द्वारा छात्र छात्राओं को तत्कालीन कविता लेखन की विधा से परिचित कराने का प्रयत्न किया गया है।

PO.1- पाठ्यक्रम का उद्देश्य द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय कवि उपाधि से अभिहित कवि मैथिली-शरण गुप्त की रचनाधर्मिता से परिचित कराने का है।

PO.2. श्रीराम काव्य परम्परा के महाकाव्य के काव्य सौष्ठव का परिचय मिलता है।

PO.3- पाठ्यक्रम में छायावादी कवियों की कविताओं का पठन पाठन अध्ययन को समाहित किया गया है।

PO-4- छायावाद के सभी प्रमुख चारों स्तम्भ कवि पाठ्यक्रम में आते हैं।

PO.5 पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों को रसानुभूति, बिम्ब, प्रतीक व काव्य प्रयोजन, काव्योत्कर्ष एवं शिल्प के गठन से परिचित कराया है।

Program Specific Outcome (PSO) पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है हिंदी कविता संसार की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में जिसके मुख्य लक्ष्य हैं

1. महान रचनाओं व उनके रचयिताओं से परिचय
2. कविता द्वारा मानवीय मूल्यों का निर्धारण
3. कविता में निहित उच्च आदर्शों की स्थापना
4. भारतवर्ष के गौरवशाली इतिहास से परिचय

Assessment Evaluation Method
For Semester System - External Exam - 50 Marks
Internal Exam 1. 20 (15+5) + 20 (15+5) = 40 Marks
2. Assignment - 10 Marks
Total - 40 + 10 = 50 Marks

हिंदी विभाग साहित्य पाठ्यक्रम

BA - II प्रथम प्रश्नपत्र

आधुनिक हिंदी- काव्य

Program Outcome (PO)

बिंदु प्रथम - पाठ्यक्रम भारत के धार्मिक आध्यात्मिक ऐतिहासि आदर्शों के चरित्र का आंशिक परिचय देता है

बिंदु द्वितीय - पाठ्यक्रम गत कथाओं को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है एवं छात्रों में राष्ट्रीयता के गौरव को भरता है।

बिंदु तृतीय - प्राकृतिक सौंदर्य के द्वारा आध्यात्मिकता द्वारा नित्य परिवर्तक को स्वीकारने की दृष्टि देता है।

बिंदु चतुर्थ - पाठ्यक्रम द्वारा प्रेम में त्याग, संयम एवं आत्म बलिदान के गौरव की स्थापना होती है।

बिंदु पंचम - पाठ्यक्रम द्वारा काव्य में भाव व शिल्प का सम्यक् बोध होता है।

Program Specific Outcome (PSO)

पाठ्यक्रम बाह्य व अभ्यांतर स्तर पर छात्रों को विचारात्मक, विश्लेषणात्मक एवं शोधपरक दृष्टि देता है। कक्षाओं में पठन पाठ, विमर्श, लघु आलेख, रचना प्रस्तुति, गोष्ठी आदि द्वारा छात्रों को स्नातक स्तर पर चेतन बनाने का प्रयास करता है।

Course Outcome

(A) पाठ्यक्रम से छात्रों के बौद्धिक व मानवीय कोण को एक दिशा मिलती है।

(B) प्रकृति के प्रति पर्यावरणीय समझ जागती है

(C) भारत के ऐतिहासिक गौरव की पहचान होती है।

Assessment / Evalution Method for Annual System

External Eam 50 marks

(हिन्दी विभाग)

साहित्य पाठ्यक्रम - बी० ए० प्रथम वर्ष

बी० ए० प्रथम वर्ष प्रथम सेमेस्टर - 'हिन्दी काव्य' (010101T)
(डॉ० विजय बहादुर त्रिपाठी)

Program Out Come - (P-O)

बिन्दु प्रथम - यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य इतिहास-लेखन की परम्परा से परिचय कराता है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल की प्रवृत्तियों एवं उनके लेखकों (कवियों) के माध्यम से मानवीय संवेदना को उभारने में मदद करता है।

बिन्दु द्वितीय - यह पाठ्यक्रम आधुनिक काल, सांस्कृतिक सामाजिक पृष्ठभूमि से परिचित कराता है। छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नवलेखन के विविध सोपानों से विद्यार्थी का परिचय कराता है।

बिन्दु तृतीय - आदिकालीन कवि एवं कविता को विद्यार्थियों तक पहुँचाता है। इसके अन्तर्गत- विद्यापति, गोरखनाथ, अमीर खुसरो, के माध्यम से प्रारम्भिक हिन्दी की गढ़न व विकास को देखा व परखा जाता है।

बिन्दु चतुर्थ - सगुण भक्ति के कृष्ण भक्ति शाखा के कवि सूरदास का संपूर्ण साहित्य परिचय एवं भ्रमरगीत का अध्ययन शामिल किया गया है।

पंचम बिन्दु - भक्तिकाल की निर्गुण शाखा के कवियों कबीर दास एवं सूफी काव्य शाखा के कवि मलिक मुहम्मद जायसी के काव्य का अध्ययन शामिल है।

बिन्दु षष्ठम - इस पाठ्यक्रम में रीतिकालीन केशवदास एवं बिहारी लाल के काव्य से बच्चों को रूबरू कराया जाता है।

बिन्दु सप्तम - आधुनिक कालीन कवियों से विद्यार्थी परिचित होते हैं। इसके अन्तर्गत भारतेन्दु युग, छायावादी युग के कवि एवं उनकी रचना से बच्चों में समझ विकसित करने का उपयोग किया जाता है।

बिन्दु अष्टम - इसके अन्तर्गत छायावादोत्तर काव्य एवं कवि के रचनाओं का अध्ययन कराकर बच्चों में मानसिक सक्षमता तथा बोधन क्षमता विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

(हिन्दी विभाग)

Program Specific Outcome (P.S.O)

इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी में मानवीयता विकसित करने की कोशिश की जाती है। जिससे वैज्ञानिक सोच द्वारा उन्हें हिंसक होने से बचाया जा सके। यह पाठ्यक्रम वाह्य एवं अभ्यांतर स्तर पर छात्रों में विचारोत्तेजना, विश्लेषणात्मक एवं शोधपरक शक्ति विकसित करता है। कक्षाओं में पठन-पाठन, लघु आलेख लेखन एवं प्रस्तुतिकरण का भी अभ्यास कराता है। यह पाठ्यक्रम छात्रों के बहुमुखी विकास के अनुकूल प्रतीत होता है।

Course Out come

A- पाठ्यक्रम से छात्रों के बौधिक व मानसिक एवं मानवीय दृष्टिकोण को एक दिशा मिलती है।

B- पर्यावरण, प्रकृति एवं जन्तुओं के प्रतिकरमी का भाव विकसित होता है।

C- भारतीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव की पहचान सुनिश्चित हो जाती है।

Assessment / Evaluation Method for Annual (Semester System)

हिन्दी पाठ्यक्रम - 6 क्रेडिट - External Exam - 75 Marks.
हिन्दी पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट - Internal Exam. 25 Marks
100 Marks.

(हिन्दी विभाग)

एम० ए० I सेमेस्टर, तृतीय प्रश्न पत्र (नाटक और रंग मंच)
(डॉ० विजय बहादुर तिपाठी)

Program Outcome (P.O) नाटक साहित्य की एक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण विधा है। भरत सूत्र से लेकर अब तक पाश्चात्य एवं भारतीय नाट्य चिंतन के प्रसिद्ध नाट्य चिंतकों का अध्ययन, नाटक के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है। नाटक यथार्थ और कल्पना का मिश्रण होता है। एक तरह से देखा जाय तो संपूर्ण मानव जीवन ही एक नाटक है।

P.O I – पाठ्यक्रम का उद्देश्य नाटक के माध्यम से मानव जीवन के बहुभाषी आयाम को स्पष्ट करना।

P.O II - भारतीय एवं पाश्चात्य नाटक के उद्देश्य को स्पष्ट करना

P.O III - 'अंधेर नगरी', 'चन्द्रगुप्त', 'लहरों के राजहंस', 'अंधा युग' के माध्यम से देशप्रेम, मानवावाद, विश्वबन्धुत्व, एवं क्षेत्रीय संवेदना को बाहर ला कर विद्यार्थियों को संपूर्ण बनाना मात्र है।

P.O IV - नाटक के माध्यम से पूरे समाज को एक सूत्र में बांधना एवं मानव हृदय को विभिन्न शिल्प एवं संवेदना से परिचित कराना है।

P.O V - इसके अन्तर्गत एकांकी के माध्यम से नाटक की एक अन्य विधा के द्वारा दर्शकों का मनोरंजन के साथ-साथ उनके मन में लोक जीवन, लोक तत्व का संपूर्ण ज्ञान कराना है।

Program Specific Outcome (PS.O) - पाठ्यक्रम विद्यार्थी के ज्ञान एवं समझ के अनुकूल है, उनके अन्दर मानवीय भाव उत्पन्न करता है।

Course Outcom –
1- जीवन के प्रति दृष्टिकोण विकसित करना।
2- जीवनानुभव एवं इतिहास से अपने भविष्य को पूर्ण करना।
3- नाटकों के माध्यम से साहित्य के महत्व को समझना।
4- जीवन की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं से लड़ने की समझ विकसित करना आदि।

Assessment / Evaluation Method for Semester System

External Exam – 50 Marks

Internal Exam – ① 20 (15+5)+(15+5)=40M

② Assignment – 10 Marks

Total = 40+10 = 50 Marks

एम० ए० I Sem. चतुर्थ प्रश्न-पत्र (प्रयोजन मूलक हिन्दी)

(डॉ० विजय बहादुर तिपाठी)

Program Out Come (P.O) आजकल हिन्दी का प्रयोग साहित्य सृजन के साथ साथ कार्यालय, पत्रकारिता, कम्प्यूटर तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी किया जा रहा है। सृजनात्मक हिन्दी से कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप भिन्न है अतः विद्यार्थियों से इसका परिचय अति आवश्यक है।

P.O. 1 – इसके अन्तर्गत हिन्दी की रूप सर्जना, भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, मातृभाषा आदि का परिचय कराना है।

P.O. 2 – जनसंचार माध्यम में हिन्दी का अनुप्रयोग, रिपोर्ट लेखन, अग्रलेख एवं संपादकीय भाषा से विद्यार्थियों का परिचय कराना है।

P.O. 3 – पत्रकारिता में हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट करना तथा जनसंपर्क एवं विज्ञापनों में हिन्दी के स्वरूप को समझना है।

P.O. 4 – इसके अन्तर्गत कम्प्यूटर का परिचय, अनुप्रयोग वेब पाब्लिसिंग आदि से बच्चों को रूबरू कराना है।

P.O. 5 – इसके अन्तर्गत अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट करना प्रक्रिया एवं प्रविधि के साथ-साथ कार्यालयी हिन्दी एवं अनुवाद की प्रक्रिया समझाना है।

Program Specific Out Come (PSO) इसके अन्तर्गत -

1- राजभाषा हिन्दी की स्थिति को स्पष्ट करना।
2- राजभाषा- राष्ट्रभाषा का तुलनात्मक अध्ययन।
3- फीचर लेखन, रेडियो, इन्टरनेट आदि से परिचय।

(हिन्दी विभाग)

4- कम्प्यूटर का परिचय, रूपरेखा उपयोग आदि का ज्ञान कराना।

5- अनुवाद के विविध रूप प्रक्रिया व प्रविधि को स्पष्ट करना है।

Assessment Evaluation Method

For Semester System-

External Exam- 50 Marks

Internal Exam - 1- 20 (15+5)+(15+5)=40

2- Assignment - 10 Marks

Total - 40+10 = 50 Marks

हिन्दी विभाग - साहित्य-पाठ्यक्रम

MA Hindi - I Sem. - 61026

प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य

Programme out come (P.O)

बिन्दु प्रथम — पाठ्यक्रम से प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन समाज का दर्शन होता है।

बिन्दु द्वितीय - आदिकालीन काव्य (संवत् 1050 से संवत् 1375 तक) के विकास में अपभ्रंश के योगदान को समझा जा सकता है।

बिन्दु तृतीय - इस युग के साहित्य के विकास में जैन, नाथ, रासो साहित्य की भूमिका स्पष्ट होती है।

बिन्दु चतुर्थ - हिन्दी के प्रथम महाकवि की रचना पृथ्वीराज रासो भारतीय समाज व संस्कृति को समझने में सहायक है।

बिन्दु - पंचम - मध्यकालीन काव्य में समाज के उद्धार के लिए संतों द्वारा किए कार्य महत्वपूर्ण हैं।

बिन्दु - षष्ठम - कबीर, जायसी, तुलसी, विद्यापति जैसे कवियों के चिन्तन द्वारा मानवता के विकास की धारा पर प्रकाश पड़ता है।

P.S.O —

1. महान प्राचीन एवं भक्त कवियों से परिचय
2. रासो एवं श्रृंगारिक रचनाओं से अवगत होगा
3. कविता द्वारा मानवीय मूल्यों की स्थापना
4. कविता द्वारा सामाजिक विमर्श की पहचान

Assessment Evaluation Method

External Exam - 50 Marks

~~1- 20(~~

Internal Exam -

1- 20 (15 Written + 05 Quiz) + 20 (15 Written + 05 Quiz) = 40

2. Assignment / Seminar 10 Marks.

Total - 40 + 10 = 50

MA I - Hindi - II Sem. G. 2026

कथा साहित्य

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

1. उपन्यास एवं कहानी के माध्यम से समाज की विसंगतियों की खोज करना।
2. मानवीय मूल्यों की स्थापना।
3. आजादी से पूर्व भारतीय समाज की संस्कृति एवं विमर्श की जानकारी प्राप्त करना।
4. किसान जीवन के संघर्ष से अवगत होना।
5. समाज में राजनीति एवं स्त्री-पुरुष सम्बंध को उद्घाटित करना।
6. लोक संस्कृति मूल्यों एवं लोकजीवन के अनुभव प्राप्त करना।

P.S.O -

1. महान कथाकारों एवं उनकी रचनाओं से परिचय।
2. मानवीय मूल्यों की खोज एवं निष्पादन
3. जीवन आदर्शों की स्थापना
4. मानव कल्याण की भावना का प्रचार एवं प्रसार
5. भारतवर्ष के समाज एवं संस्कृति का समुचित विकास करना।

Assessment Evaluation Method

External Exam – 50 Marks

Internal Exam

1. 20 (15+5) + 20 (15+5) = 40
2. Assignment / Seminar – 10

Total – 40+10 = 50 Marks

or

MA - I Hindi II Sem. G-2025

उत्तर मध्यकालीन काव्य

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :—

1. इस पाठ्यक्रम से रीतिकालीन समाज एवं संस्कृति को समझा जा सकता है।
2. दरबारी समाज एवं कला के बीच सामंजस्य का पता चलता है।
3. यह पाठ्यक्रम 'रति' जैसे मानव हृदय की मूल प्रवृति की ओर संकेत करता है।
4. प्रेम का श्रृंगारिक रूप को समझा जा सकता है।
5. रसिकता और आत्मीयता का सुन्दर संयोग को देखा जा सकता है।
6. जीवन के मधुर पक्ष को समझने के लिए यह पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण है।
7. इस युग के महान कवियों की रचनाएँ जीवन में स्त्री के महत्व एवं उनके सौन्दर्य की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करती है।
8. यह पाठ्यक्रम स्त्री के सौन्दर्य को यौनिकता के सन्दर्भ में समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

P.S.O. —

1. रीतिकालीन या दरबारी साहित्य को समझना
2. श्रृंगारिकता को महत्व स्थापित करना
3. नख-शिख वर्णन के दर्शन को समझना
4. वयसन्धि से परिचय

Assessment / Evaluation Method

External Exam - 50

Internal Exam -

1 - 20 (15 Written + 5 Quiz) = 20.

15 + 5 = 40

(2) Assignment - 10 Marks

Total = 40 + 10 = 50

Assessment / Evaluation Method

External Exam — 50

Internal Exam —

1- 15 Written + 5 Quiz = 20 (15+5)

= 40 Marks

2- Assignment / Seminar — 10 Marks

Total = 40+0 = 50

M.A. II - Hindi IV Sem, G-4026
हिन्दी - आलोचना

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -
1. आलोचना के सिद्धान्त की जानकारी
2. सफल आलोचक के गुणों से परिपूर्ण होना
3. आलोचना के विभिन्न प्रकार एवं विचार धाराओं से उसका सम्बंध को समझना।
4. शुक्ल जी के आलोचना सिद्धान्त द्वारा आलोचना के प्रतिमान निर्धारित करना।
5. द्विवेदीजी की मानवतावादी दृष्टि को समझना।
6. दिनकर की राष्ट्रीय चेतना एवं अज्ञेय की साहित्यिक मान्यताओं की जानकारी।

Program specific out come (P.S.O.)
- पाठ्यक्रम के द्वारा आलोचनात्मक दृष्टि का विकास.
- हिन्दी आलोचकों की आलोचना दृष्टि से परिचय
- आलोचना की परम्परा एवं इतिहास को समझना

Assessment / Evaluation Method

External Exam - 50
Internal Exam - 15 (Written) + 5 (Oral) = 20 (15+5) = 40 Marks
2. Assignment / Seminar - 10 Marks
Total - 40+10 = 50 Marks.

MA II - Hindi III Sem. G-3027

पत्रकारिता प्रशिक्षण

Programme out come (P.O.)

1- पाठ्य क्रम से जीवन में समाचारों की भूमिका स्पष्ट होती है।
2. पाठ्य क्रम से लोकतन्त्र के ~~चौथे~~ चौथे स्तम्भ को मजबूत मिलती है।
3. पाठ्य क्रम से प्रिन्ट पत्रकारिता एवं इलेक्ट्रानिक पत्रकारिता के ~~स~~ विकास को समझा जा सकता है।
4. पाठ्य क्रम समाचार के विभिन्न स्रोत, पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास, समाचार के मूल तत्वों को स्पष्ट करता है।
5. इस पाठ्य क्रम से संपादन कला को समझा जा सकता है।
6. यह पाठ्य क्रम समाचार संकलन की तकनीक से छात्र/छात्राओं को अवगत कराता है।
7. इस पाठ्य क्रम से रेडियो एवं टेलीविजन की तकनीक से परिचय प्राप्त होता है।
8. यह पाठ्य क्रम ~~सेक~~ रोजगार परक पाठ्य क्रम है।
9. यह पाठ्य क्रम समता, बन्धुत्व, स्त्री एवं दलित जागरण के लिए अति महत्वपूर्ण है।

P.S.O. - पत्रकारिता का जीवन में महत्व
- पत्रकारिता ~~के~~ इतिहास एवं परम्परा का बोध
- सूचनाओं के महत्व को स्थापित करना
- लोकतन्त्र की मजबूती में ~~महत्व~~ योगदान

B A - III साहित्य पाठ्य क्रम

B.A III प्रश्न पत्र :- प्रथम

अर्वाचीन हिन्दी एवं कौरवी लोककाव्य

Program out come (P.O.)

1. वर्तमान में कविता की विशेषताओं से परिचय
2. नयी कविता से परिचय
3. मनोविश्लेषण का व्यक्ति पर प्रभाव
4. प्रकृति के साथ साहित्य का सम्बंध
5. कविता द्वारा मानवीय मूल्यों की स्थापना
6. मनुष्य की संवेदना का विकास करना
7. भाषा एवं समाज पर प्रकाश डालना

P.S.O. -

1. लोकगीतों के स्वर से परिचय
2. राष्ट्रीय आन्दोलन के महत्व पर प्रकाश
3. स्त्री के महत्व की स्थापना
4. कविता द्वारा समाज एवं संस्कृति के सम्बंध का विवेचन
5. कविता द्वारा समाज एवं सभ्यता की समीक्षा

Assessment/Evaluation Method

Annual System.

External Exam - 50 Marks.